Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

आभे फाटे थीगरी,
कुण छ देवणहार।
ज्यूं गुर सहीत विगडीयो,
त्यारे चिहुं दिस परिया बघार।।

आकाश ही फट जाए तो कारी कौन लगाए? जब गुरु सहित शिष्य बिगड़ जाए, चारों ओर छेद ही छेद, तब कौन सुधारे।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 27 • 06 अप्रैल - 12 अप्रैल 2026 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 04-04-2026 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

मानव देह पाकर धर्म का श्रवण दुर्लभ, आत्म-शुद्धि से प्रशस्त होगा मोक्ष मार्ग : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

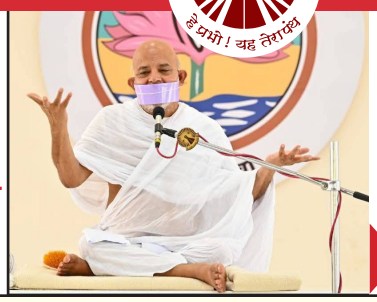

शिष्य वही, जो गुरु के बोले बिना उनके मनोभावों को समझ ले : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

Address Here

राम और भिक्षु का सत्व एक समान, पराक्रम से ही मिटता है अंधकार : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं में 267वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस एवं जैन विश्व भारती स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ संपन्न

लाडनूं।
27 मार्च, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर की 'सुधर्मा सभा' में 267वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस और जैन विश्व भारती का स्थापना दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री ने अपनी अमृत देशना में जीवन के शाश्वत सत्यों और तेरापंथ के गौरवशाली इतिहास पर प्रकाश डाला।

आचार्य भिक्षु का जीवन तप और साहस का प्रतीक : योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत आयोजित इस सभा को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि यह संसार अध्रुव और अशाश्वत है। उन्होंने फरमाया, 'प्राणी दुर्गति से बचने के लिए तपोगुण प्रधान बने, सरल व सहज रहे और परीषहों (कठिनाइयों) को जीतने वाला बने।

आज के दिन का ऐतिहासिक महत्व बताते हुए उन्होंने फरमाया कि चैत्र शुक्ला नवमी (रामनवमी) के ही दिन तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु ने सत्य की खोज में अभिनिष्क्रमण किया था। उनकी माता दीपाजी द्वारा देखे गए सिंह के स्वप्न का उल्लेख करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि भिक्षु स्वामी का जीवन शेर की भांति निर्भीक और अदम्य साहसी था।

उन्होंने प्राणों की परवाह किए बिना धर्मक्रांति का सूत्रपात किया।

श्रीराम और आचार्य श्री भिक्षु: सत्व की विजय : रामनवमी के प्रसंग को जोड़ते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि भगवान श्रीराम ने केवल वानर सेना और अपने आत्मबल के सहारे लंका पर विजय प्राप्त की थी। इसी प्रकार, आचार्य भिक्षु ने भी घोर विरोध और बाधाओं के बावजूद केवल अपने 'सत्व' और सिद्धांतों के बल पर एक महान मर्यादा की स्थापना की। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि तेरापंथ के नाम के साथ एक बड़ा योग जुड़ा हुआ है एक और १३ साधु, १३ श्रावक और १३ नियम की संख्या की बात है तो दूसरी और इसमें चरम विनयशीलता का भी दर्शन होता है। (शेष पेज 9 पर)

महान पुरुषों की सफलता बाहरी उपकरणों पर नहीं, आत्मबल और साहस पर टिकी होती है

-आचार्यश्री महाश्रमण

योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत 'विनयसुत्तं' आगम पर प्रदान किया पावन पाथेय

विशिष्ट बनने के लिए शिष्ट होना आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
26 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता और युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए जीवन में विनय और अनुशासन के महत्व पर प्रकाश डाला।

'उत्तरज्झयणाणि' आगम के 'विणयसुत्तं' अध्ययन के आधार पर आचार्यश्री ने फरमाया कि संसार में हर व्यक्ति विशिष्ट बनना चाहता है, लेकिन विशिष्टता का मार्ग शिष्टता से होकर गुजरता है। जो व्यक्ति अनुशासित और शालीन है, वह स्वतः ही विशिष्ट बन जाता है।

विद्या की शोभा विनय से ही : आचार्य प्रवर ने शास्त्र की व्याख्या करते हुए फरमाया कि शास्त्र वे हैं जो शासन करते हैं और त्राण (रक्षा) प्रदान करते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया

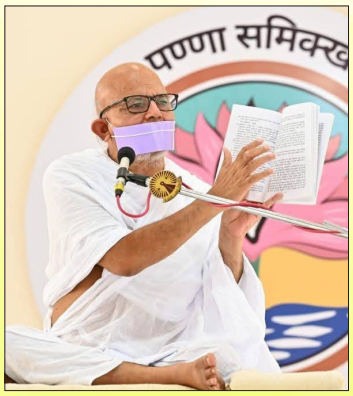

कि आगमों के निर्देश साधु समुदाय को मर्यादित रखते हैं और उनके अनुसार आचरण करने से जीव पाप कर्मों से मुक्त होता है।

पूज्य प्रवर ने फरमाया, 'विद्या विनय से ही शोभित होती है। एक सच्चा ज्ञानी वही है जो अपने ज्ञान का अहंकार नहीं करता और न ही उसका निरर्थक प्रदर्शन करता है।'

अखंड व्रत ही साधुत्व की शक्ति : साधु जीवन की शुचिता पर बल देते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि पांच महाव्रतों का निर्दोष पालन ही साधु को तेजस्वी बनाता है। यदि एक भी महाव्रत खंडित होता है, तो पूरा साधुत्व उसी प्रकार बिखर जाता है जैसे धागा टूटने पर माला के मोती। ऐसे व्रतों का पालन करने वाला साधक देव जगत में भी पूजनीय होता है। (शेष पेज 9 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
06 अप्रैल - 12 अप्रैल 2026

कष्टों और प्रतिकूलताओं में समता भाव ही सच्ची निर्जरा : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य प्रवर का हुआ केश लूंचन : मुनि पारस कुमार जी की 53 दिवसीय तपस्या का प्रत्याख्यान

लाडनूं।
28 मार्च, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती के पावन प्रांगण में श्रद्धालुओं को धैर्य और आत्म-विजय का मार्ग दिखाया।

'उत्तरज्झयणाणि आगम' के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए आचार्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि जीवन में आने वाले कष्ट और 'परीषह' (कष्ट सहिष्णुता) आध्यात्मिक प्रगति के सोपान हैं।

अहिंसा की साधना में 'परीषह' का महत्व : आचार्यश्री ने प्रवचन में फरमाया कि साधु जीवन में अहिंसा की चेतना के साथ-साथ कष्ट सहिष्णुता का मनोभाव होना अनिवार्य है। उन्होंने आगम में वर्णित 22 परीषहों का उल्लेख करते हुए फरमाया— 'चाहे भूख-प्यास हो या शीत-ताप जैसी प्राकृतिक प्रतिकूलताएं, साधु को अपने मनोबल से इन्हें समता भाव के साथ सहना चाहिए। वर्षा आए या रुके, गर्मी की लू चले या न चले, साधक को कभी अधीर नहीं होना चाहिए।'आचार्यश्री ने प्रेरणा दी कि जब भी प्रतिकूल परिस्थिति आए, तो नारकीय जीवों की असहाय वेदना का चिंतन कर स्वयं के कष्टों को कर्म निर्जरा का अवसर मानना चाहिए।

व्यावहारिक जीवन का मंत्र : श्रेष्ठ कार्यों से दें निंदा का उत्तर : आध्यात्मिक और व्यावहारिक जीवन में सामंजस्य बिठाते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि केवल शारीरिक स्वस्थता ही पर्याप्त नहीं, चित्त की प्रसन्नता और मनोबल भी अनिवार्य है। उन्होंने फरमाया कि यदि कोई निंदा करे या अपमान का प्रसंग आए, तो वाणी का संयम रखते हुए अपने श्रेष्ठ कार्यों से स्तरीय आलोचना का उत्तर देना चाहिए।

गृहस्थों को संदेश देते हुए उन्होंने फरमाया कि आर्थिक या स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में विलाप करने के बजाय जप, तप और स्वाध्याय से परिस्थितियों का सामना करें।

मुनि पारसकुमारजी ने रचा नया कीर्तिमान : इस अवसर पर धर्मसंघ में एक गौरवशाली अध्याय जुड़ा, जब मुनि पारसकुमारजी ने पूज्य गुरुदेव की सन्निधि में 53 दिन की निराहार तपस्या का प्रत्याख्यान किया। तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में इसे एक बड़ी उपलब्धि और कीर्तिमान के रूप में देखा जा रहा है।

केश लुंचन : स्वाध्याय की प्रेरणा पूज्य आचार्यश्री के मुखारविंद और मस्तक के केश लुंचन का विशेष प्रसंग रहा। चतुर्विध धर्मसंघ ने आचार्य प्रवर के प्रति वंदना निवेदित कर उनकी सुख-साता पूछी।

इस निर्जरा के उपलक्ष्य में आचार्यश्री ने समस्त साधु-साध्वियों और समणियों को एक-एक घंटा आगम स्वाध्याय करने की प्रेरणा प्रदान की। गीत प्रस्तुतिः साध्वी प्रेमलताजी एवं साध्वी समन्वयप्रभाजी द्वारा।

मानव देह पाकर धर्म का श्रवण दुर्लभ, आत्म-शुद्धि से प्रशस्त होगा मोक्ष मार्ग : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर की वर्ष 2028 के 'अक्षय तृतीया' टोहाना-हरियाणा में करने की घोषणा

लाडनूं।
29 मार्च, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने योगक्षेम वर्ष लाडनूं प्रवास के दौरान श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए मानव जीवन की दुर्लभता पर प्रकाश डाला। उन्होंने फरमाया कि चौरासी लाख जीवयोनियों के चक्र में 'संज्ञी मनुष्य' का जन्म प्राप्त करना अत्यंत कठिन है, और उससे भी दुर्लभ है—मनुष्य देह पाकर सद्धर्म का श्रवण करना।

पाप आचरण से बचें, विवेक जगाएं : आचार्यश्री ने जैन आगम उत्तरज्झयणाणि' का हवाला देते हुए फरमाया कि जिन लोगों को मनुष्य जन्म पाकर भी धर्म-अधर्म या हिंसा-अहिंसा का विवेक नहीं होता, वे इस अनमोल अवसर को पाकर भी पाप कर्मों में लिप्त हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति दुर्गति (नरक) के पात्र बनते हैं। पूज्य प्रवर ने फरमाया 'कल्याणकारी वाणी'सुनने से ही भीतर के भावों में शुद्धता आती है और व्यक्ति तप के मार्ग पर अग्रसर होता है।'

जीवन सुधार के लिए 'पंचशील' मंत्र : पूज्य प्रवर ने सुखी और सार्थक जीवन के लिए पांच महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर बल दिया–

अच्छा सुनें और देखें : इससे विचारों में सात्विकता आती है।

अच्छा सोचें और बोलें : मानसिक और वाचिक शुद्धि से व्यक्तित्व निखरता है।

अच्छा करें : कर्मों की शुद्धि ही आत्म-कल्याण का आधार है।

तप का अर्थ केवल उपवास नहीं : तपस्या की व्याख्या करते हुए गुरुदेव ने स्पष्ट किया कि केवल भूखा रहना ही तप नहीं है। आगमों में इसके बारह भेद

बताए गए हैं। स्वाध्याय करना, ज्ञान को कंठस्थ करना और अपनी भूलों के लिए प्रायश्चित करना भी उत्कृष्ट कोटि की तपस्या और श्रुत आराधना है। उन्होंने सरलता (ऋजुता) को जीवन का महान गुण बताते हुए कहा कि जो व्यक्ति बालक की भांति निष्कपट होकर गुरु के समक्ष अपने दोषों को स्वीकार कर लेता है, उसकी आत्मा का मार्ग साफ हो जाता है।

विश्व शांति और अहिंसा की अपील : वैश्विक स्तर पर चल रहे युद्धों और अशांति पर आचार्यश्री ने विश्व को शांति का संदेश देते हुए फरमाया कि विपरीत परिस्थितियों और विरोधों के बीच भी समता भाव रखना अनिवार्य है। उन्होंने आचार्य तुलसी और जयाचार्य का उदाहरण देते हुए कहा कि क्रोध का त्याग कर अच्छी नीति पर चलना ही मानवता की सच्ची सेवा है।

वर्ष 2028 की बड़ी घोषणा : टोहाना (हरियाणा) के श्रावक समाज की विनती पर आचार्यश्री ने वर्ष 2028 का अक्षय तृतीया महोत्सव यथासंभव टोहाना में आयोजित करने की मंगल घोषणा की। युवती सम्मेलन 'संगम': अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में त्रिदिवसीय विराट युवती सम्मेलन का मंचीय कार्यक्रम संपन्न हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्षा सुमन नाहटा ने विचार व्यक्त किए। कठिन तप का संकल्पः मुनि नमिकुमारजी ने गुरुदेव के सानिध्य में 45 दिवसीय तपस्या का प्रत्याख्यान ग्रहण किया। (युद्ध के शोर में गूंजा सुधर्मा सभा में अहिंसा स्वर)

सीपीएस नेशनल ट्रेनर वर्कशॉप का भव्य आगाज

बैंगलोर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर द्वारा सीपीएस अकादमी फॉर लीडरशिप एंड एक्सीलेंस के अंतर्गत नेशनल ट्रेनर वर्कशॉप का भव्य उद्घाटन अंकित विस्टा रिसोर्ट, बैंगलोर में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुई, तत्पश्चात विजय गीत का संगान और आस्था की पुष्टि के लिए श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया गया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने कार्यशाला के विधिवत शुभारंभ की घोषणा करते हुए अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि सीपीएस अकैडमी व्यक्तित्व विकास के साथ नेतृत्व विकास और सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य कर रही है। तेयुप विजयनगर देश भर में अपने कार्यों के द्वारा विशिष्ट पहचान बना चुकी है। उन्होंने सीपीएस की प्रारंभ से अकादमी के रूप में विकसित होने तथा सरकारी स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन तक की जानकारी साझा की। परिषद् अध्यक्ष विकास बाँठिया ने स्वागत करते हुए प्रतिभागियों के उज्ज्वल भविष्य हेतु मंगलकामनाएं व्यक्त कीं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विमल कटारिया ने सभी प्रतिभागियों की सफलता हेतु शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जीवन में सफल बनने के लिए सकारात्मक सोच और सही दिशा का निर्धारण अहम होता है। इसके अलावा हर व्यक्ति के जीवन में दाता भाव का होना बहुत जरूरी है । जब आप परोपकार के उद्देश्य से कार्य करते है तो आपके उत्थान के लिए कोई शक्ति कार्य करने लग जाती है । सीपीएस अकादमी के राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी ने भी विचार व्यक्त करते हुए प्रशिक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला।

कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक अरविन्द मांडोत, सह-प्रशिक्षक रक्षा मांडोत एवं बबिता रायसोनी को आगामी सत्रों के संचालन हेतु मंच सुपुर्द किया गया। परिषद् की ओर से सभी प्रतिभागियों एवं अभातेयुप पदाधिकारियों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। इस अवसर पर परिषद् पूर्व अध्यक्ष अमित दक, कमलेश चोपड़ा की गरिमामय उपस्थिति रही। गौरतलब है कि 80 घंटे निरंतर गतिमान रहने वाली इस कार्यशाला में सभी प्रशिक्षुओं को विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है और हर परिस्थिति और अनेक विषयों पर सामयिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस कार्यशाला में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, असम, कर्नाटक राज्यों के चयनित प्रशिक्षक भाग ले रहें है। दीक्षांत समारोह आगामी रविवार को आयोजित होगा। कार्यशाला के व्यवस्थाओं में तेयुप विजयनगर से उपाध्यक्ष पवन बैद, सहमंत्री अमित नाहटा, कार्यशाला संयोजक विनीत गांधी सहित परिषद् परिवार के अनेक सदस्यों का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

बंगाईगांव।

महातपस्वी महामनस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान् सुशिष्य मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमारजी ठाणा - 2 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' के महामंत्रोचार के साथ हुआ।तेरापंथ महिला मंडल ने सामूहिक प्रेक्षा-ध्यान गीत की प्रस्तुति देकर उपस्थित श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। मुनिश्री आनंद कुमार जी 'कालू' ने 'बदले जीवन धारा ध्यान करें स्वयं का आत्म निरीक्षण, हम प्रेक्षा के द्वारा साधना की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। मुनिश्री ने बताया कि जैन धर्मावलंबियों के लिए प्रेक्षा ध्यान एक पद्धति है।

गणाधिपति गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी की आज्ञा को सिरोधारी करते हुए आज से 50 वर्ष पूर्व प्रेक्षाध्यान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने ध्यान का नवीनीकरण करते हुए प्रेक्षाध्यान जैसे अवदान को देकर जन-जन की आध्यात्मिक चेतना को और अधिक प्राकृक्तिक्क करने का प्रयास किया। मानसिक संतुलन बनाये रखने में सहायक करता है प्रेक्षा ध्यान मानसिक शांति, शारीरिक स्वास्थ्य और तनाव मुक्ति के उद्देश्य से प्रेक्षा ध्यान का प्रयोग करना चाहिए। उपस्थित श्रावक समाज को ध्यान के लाभों के बारे में जागरूक करने और उन्हें मानसिक सुदृढता के लिए प्रेरित करने हेतु प्रेक्षा-ध्यान कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। मन, वचन और काया की प्रवृक्ति पर निरोध करते हुए अपनी आत्मा में रमण करना ही प्रेक्षाध्यान है, जिसकी वर्तमान समय में अत्यधिक आवश्यकता है। वर्तमान समय में व्यक्ति को भावनात्मक मानसिक तनाव आदि से बचाने के लिए प्रेक्षा ध्यान एक सफल समाधान के रूप में सबके सामने आया है। सहनशीलता और धैर्यशीलता की कमी बात- बात पर गुस्सा आ जाना इन सब का बस एक ही निवारण है प्रेक्षाध्यान।

आज संपूर्ण विश्व में प्रेक्षा ध्यान का डंका बजा हुआ है। मुनिश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा कि ध्यान अंदर की यात्रा है। मनुष्य बाहरी जगत में तो घूम लेता है, लेकिन अंदर की यात्रा के लिए ध्यान आवश्यक है।

ध्यान के बिना ज्ञान भी संभव नहीं है। वैज्ञानिक बाहर की खोज करता है तो वहीं साधक भीतर की खोज करता है। अध्यात्म क्षेत्र में ध्यान का बहुत बड़ा महत्व है, आत्मा से आत्मा के लिए ध्यान करना चाहिए। विभिन्न प्रकार की आत्माओं की खोज करने के लिए हमे अंतर यात्रा करनी चाहिए। मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान का अर्थ बताते हुए कहा कि प्रेक्षा शब्द इक्ष धातु तथा प्र शब्द से बना है। प्रेक्षा का अर्थ है देखना और प्र को विशेष तथा गहराई से देखना। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रेक्षाध्यान पद्धति की शुरुआत विक्रम संवत 2032 सन् 1975 में जयपुर में की गई। वैज्ञानिक एवं तकनीक विकास के युग में जीने वाले मनुष्य तनाव एवं चिंता से ग्रस्त है। विकट स्थिति में प्रेक्षाध्यान जीवन की बहुत सी बीमारियों को दूर करने में आवश्यक है।

प्रेक्षाध्यान द्वारा शारीरिक मानसिक भावनात्मक रोगो को दूर किया जा सकता है। प्रेक्षाध्यान का भावार्थ है, र आत्मा के द्वार आत्मा को गहराई से देखो। दूसरे शब्दों में जानना, देखना और अनुभव करना प्रेक्षाध्यान है। मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान की कार्यशाला में अर्हम ध्वनि, कायोत्सर्ग, अन्तर्यात्रा दीर्घ श्वास प्रेक्षा, समवृत्ति श्वास प्रेक्षा, शरीर प्रेक्षा, मृदुता की अनुप्रेक्षा का प्रयोग, महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया गया।

मानव संस्कृति और सभ्यता के आदिकर्ता भगवान ऋषभ

जयपुर।

जयपुर। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव जी का जन्म कल्याणक और दीक्षा कल्याणक दिवस बुधवार को भिक्षु साधना केन्द्र, श्याम नगर में समारोह पूर्वक मनाया गया।

कार्यक्रम में सान्निध्य प्रदान करते हुए मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' ने कहा - भगवान ऋषभ देव जी का जैन धर्म के ग्रंथों के अलावा अन्य धर्मों के ग्रंथों में भी उल्लेख मिलता है। वे मानव संस्कृति और सभ्यता के आदिकर्ता थे।

उन्होंने पहले समाज व्यवस्था का सूत्रपात किया, फिर धर्म तीर्थ का प्रवर्तन किया। मुनि श्री जी ने बताया कि इस युग के प्रथम राजा, प्रथम साधु और प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ हुए। उससे पूर्व न कोई समाज, न गाँव और न कोई घर था।

लोग जंगल में रहते और कल्पवृक्ष पर आश्रित थे। ₹हम दो और हमारे दो₹ की व्यवस्था कुदरत कृत चल रही थी। बाद में प्रकृति ने मानव को नव-निर्माण के लिए बाध्य किया, तब मानवों में से एक महामानव का अवतरण हुआ। वह महामानव भगवान ऋषभ थे, जिन्होंने साधारण मनुष्य के रूप में जन्म लेकर असाधारण कार्य किये।

उन्होंने प्रत्येक मानव को समूह में शांतिपूर्ण जीवन जीने की और जीवनयापन की कला सिखायी। साथ ही उन्होंने आत्मोत्थान के लिए धर्म का संदेश दिया और धर्मतीर्थ का प्रवर्तन किया। मुनि श्री संभव कुमार जी ने सुमधुर गीत के माध्यम से भगवान ऋषभ देव जी की स्तुति की।

इस अवसर पर मुनि द्वय ने 'ॐ ऋषभाय नमः' मंत्र का जप भी कराया। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल सी-स्कीम अध्यक्षा कनक आंचलिया तथा श्रावक संदीप भंडारी ने भी अपने विचार रखे।

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है। माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां आत्मशुद्धि है, विश्वास भी है।
– आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
06 अप्रैल - 12 अप्रैल 2026

तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला का सफल आयोजन

उत्तर कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशन में तेरापंथः मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन ओम स्काई लार्क के कम्युनिटी हॉल में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उत्तर कलकत्ता द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला में प्रशिक्षिका जया बोथरा थी। कार्यशाला में लगभग 60 भाई-बहिनों ने सहभागिता दर्ज कराई । कार्यशाला में प्रशिक्षण प्रदान करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा - तेरापंथ की पृष्ठभूमि आचार क्रांति विचार क्रांति और अनुशासन क्रांति की त्रिपदी पर अवस्थित है। आचार्य भिक्षु तेरापंथ के संस्थापक थे। उनके जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आए वे अभावों में जीए फिर भी वे हमेशा प्रसन्न रहें। उन्होंने तत्कालीन साधु समाज की स्थितियों को देखकर धर्म क्रांति की। वह धर्म क्रांति तेरापंथ के रूप मे विख्यात हुई। आचार्य भिक्षु महान साधक थे। उनका चिंतन हमेशा स्वस्थ और स्पष्ट था ।

तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला आचार्य भिक्षु के दर्शन को समझने का सुन्दर अवसर है। आचार्य भिक्ष की लौकिक लोकोतर दोन-दया की अवधारणा आदि सिद्धांतों को समझना चाहिए। मुनिश्री ने आचार्य भिक्षु के सिद्धान्तों का प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला में प्रशिक्षिका श्रीमती जया बोथरा ने 'साध्य-साधना मीमांसा, दान और दया, प्रतिमा पूजा आदि विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला और प्रशिक्षण प्रदान दिया।

आचार्य भिक्षु एक दिव्य महापुरुष थे

बगड़ीनगर।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा बगड़ी नगर में अनुवत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सुशिष्य मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' के सान्निध्य में आचार्य श्री भिक्षु का 267वां अभिनिष्क्रमण दिवस अध्यात्म चेतना दिवस के रूप में तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ग्राम सरपंच भुण्डाराम चौधरी एवं आचार्यश्री मिशु रामाधि स्थल संस्थान के अध्यक्ष निर्मल श्रीमाल एवं मंत्री मर्यादा कुमार कोठारी थे।

कार्यक्रम में नमस्कार-महामंत्र एक ऊँ मिक्षु का जाप सामूहिक रूप से करने के पश्चात् श्रद्धेय मुनि चैतन्यकुमार 'अमन' ने अपने वक्तव्य में भिक्षु स्वामी के जीवन प्रसंगों को उल्लेखित करते हुए कहा- आचार्यश्री भिक्षु एक क्रांतचेता युग पुरुष थे। उन्होंने तत्कालीन धर्मक्षेत्र में शिथिलता के प्रति क्रांति का शंखनाद किया। उनकी क्रांति भावुकता में लिया गया निर्णय नहीं अपितु एक साहसिक निर्णय था। रामनवमी जो कि राम जन्मोत्सव के दिन इस दिशा अभिनिष्क्रमण किया।

मुनि अमन ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा जैसा श्रीराम इस युग में मर्यादा पुरुषोतम के रूप में विश्व विख्यात हैं ठीक उसी प्रकार आचार्य श्री भिक्षु भी मर्यादा पुरुषोतम के रूप में प्रख्यात हैं।

उन्होंने उस समय साध्याचार के प्रति मर्यादाओं का निर्माण कर धर्मसंघ को अनुशासन और व्यवस्थित रूप दिया। उनके पास संयम, सेवा, साहस और राम रूपी चार विशेष सम्पदा थी। उनका ज्ञान वैभव विशाल था। जैसा कि भारत के पास ग्रंथ संपदा, पंथ संपदा और संत संपदा विशेष रूप से है। ऐसे महामना भिक्षु का अभिनिष्क्रमण दिवस जन मानस के लिए प्रेरणास्पद है। कार्यक्रम में भिक्षु-स्तुति के रूप में वंदना पोकरणा ने मंगलाचरण किया। कार्यक्रम में ग्राम सरपंच मुण्डाराम चौधरी, सिरियारी संस्थान अध्यक्ष निर्मल श्रीमाल, मंत्री मर्यादा कुमार कोठारी ने प्रमुख वक्ता के रूप में आचार्य भिक्षु के जीवन प्रसंगों को उल्लेखित किया। अभातेयुप से रोशन नाहर, अणुव्रत समिति से श्याम जोशी, ठाकुर जयसिंह, बालिका स्कूल से सर दिनेश, महेन्द्र मेवाड़ा, बी.के, अशोक मूथा ने अपने विचार व्यक्त किए। अतिथियों का सम्मान अध्यक्ष राजेश सुराणा, मंत्री विकास सेठिया, सुनिल सुराणा ने मोमेंटो व दुपट्टा पहनाकर किया। कार्यक्रम में आस-पास के क्षेत्रों तथा बगड़ी से बाहर प्रवासित क्षेत्रों से अनेक भाई-बहनों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। कार्यक्रम के अंत में सभी समागत महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त व संयोजक मंत्री विकास सेठिया ने किया।

कान्फ्रेन्स हॉल उद्घाटन एवं तेरापंथ-मेरा पंथ कार्यशाला का आयोजन

उधना।

उधना। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उधना द्वारा तेरापंथ भवन, उधना में नवनिर्मित कान्फ्रेन्स होल का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। लुधियाणा से समागत तेरापंथ उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश शामसुखा ने नमस्कार महामंत्र का मंगल उच्चारण करते हुए कान्फ्रेन्स होल का उद्घाटन किया।

जैन संस्कारक अर्जुन मेडतवाल, मिश्रीमल नंगावत, जसवंत डांगी एवं कमलेश डांगी ने संपूर्ण शास्त्रोक्त जैन संस्कार विधि द्वारा विधिवत उद्घाटन एवं प्रवेश करवाया। इस अवसर पर उद्घाटनकर्ता सूर्यप्रकाश शामसुखा ने कहा - पश्चिमांचल क्षेत्र में उधना क्षेत्र अपना विशिष्ट स्थान रखता है। तेरापंथ भवन का यह आचार्य महाश्रमण कान्फ्रेन्स हॉल समाज की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने में उपयोगी सिद्ध हो और समाजजनों के आध्यात्मिक विकास में सहयोगी हो ऐसी मंगलकामना करता हूं।

उन्होंने कहा- आज यहां आयोजित 'तेरापंथ - मेरा पंथ कार्यशाला' तेरापंथ दर्शन को समझने में बहुत उपयोगी सिद्ध होगी ऐसा विश्वास है। इसकी संचालिका कुमुद कच्छारा अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा और 'बेटी तेरापंथ की' प्रोजेक्ट की राष्ट्रीय संयोजिका हैं। कुमुद कच्छारा ने प्रथम सत्र में तेरापंथ दर्शन के विविध पहलू - साध्य-साधन मीमांसा, दान-दया एक विश्लेषण, मूर्तिपूजा - भावपूजा आदि विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में जिज्ञासाओं का समाधान दिया। तेरापंथी सभा - उधना के अध्यक्ष निर्मल चपलोत ने स्वागत वक्तव्य दिया। पूर्व अध्यक्ष लक्ष्मीलाल बाफना, बसंतीलाल नाहर, महिला मंडल अध्यक्षा महिमा चोरडिया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष रतन भलावत, तेयुप. उधना अध्यक्ष कमलेश बाफना, जैन संस्कारक श्री अर्जुन मेड़तवाल आदि ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर कॉन्फ्रेंस हॉल निर्माण में आर्थिक सौजन्य प्रदान करने वाले परिवारों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री मुकेश बाबेल ने किया।

टीपीएफ ने किया वॉकोथॉन का सफल आयोजन

दिल्ली।

दिल्ली। वॉकोथॉन की शुरुआत अणुव्रत भवन से लेकर कनॉट प्लेस तक करीब 3 किलोमीटर तक की गई। इस दौरान करीब 200 से ज्यादा लोगों ने इस वॉकोथॉन में हिस्सा लिया। टीपीएफ दिल्ली अध्यक्ष कविता बरड़िया ने वॉकोथॉन के लिए सभी का स्वागत किया और वॉकोथॉन कार्यक्रम का महत्व बताया। वॉकोथॉन के दौरान मुनीवीअभीजीत कुमार जी और मुनी जागृत कुमार जी का सानिध्य भी सबको मिला।

उन्होंने मंगलपाठ से वॉकोथॉन की शुरुआत करवाई। कार्यक्रम को भारतीय जैन संगठन, दिल्ली के साथ मिलकर किया गया। वॉकोथॉन में स्वास्तिक इंटरकेम, डेको ग्रुप और यूनिप्वॉइंट स्पॉन्सर्स के तौर पर शामिल रहे। वॉकोथॉन की शुरुआत में सभी को एक्सरसाइज करवाई गई। वहीं वॉकोथॉन के कन्वेनर टीपीएफ दिल्ली की ज्वॉइंट ट्रेजरार अर्पणा दुगड़ और ज्वॉइंट सेक्रेटरी विकास मालू रहे।

कार्यक्रम में जेएसटी दिल्ली अध्यक्ष सुखराज सेठिया, भारतीय जैन संगठन दिल्ली के अध्यक्ष कमल जैन सेठिया, जेएसटी दिल्ली के मंत्री प्रमोद घोड़ावत और विमल बैंगानी की उपस्थिति भी काफी अहम रही।

प्रेक्षा ध्यान शिविर : उल्लासित मन मंदिर

प्रेक्षा की निर्धूम ज्योति से ज्योतिर्मय हम बन जाएं

● साध्वी श्री शुभ्रयशा ●

प्रेक्षा की निर्धूम ज्योति से ज्योतिर्मय हम बन जाएं
प्रायोगिक है जीवन प्रभु का, आदर्शों को अपनाएं।

योगक्षेम वर्ष में शिक्षण और प्रशिक्षण पाएगें
आत्मनिरीक्षण करके चेतन मन की शक्ति जगाएगे
गुरू ऊर्जा से शक्तिपात हो, केन्द्र हमारे जग जाए।।

प्रेक्षाध्यानी अनुसंधानी निज दर्शन कर पाएगें
पूरक, रेचक, कुंभक से उपशम के स्राव बहाएगे
श्वासों के रथ पर चढ़ करके ऊर्ध्वारोहण कर पाए।।

B.A, MA, CA बनकर गण नीवें गहराएंगें
कार्योत्सर्ग मंत्र प्रेक्षा से, नया सवेरा लाएंगे
ऋजुता से भावित हो तन-मन, परमानंद परम पाएं।।

दर्शनकेन्द्र णमों सिद्धाणं बाल सूर्य का perception
ज्योतिकेन्द्र संवेग नियंत्रण, कार्यों में हो perfection
(श्री तुलसी) महाप्रज्ञ अवदान शुभकंर प्रेक्षापथ पर बढ़ जाए
महाश्रमण गुरूवर क्षेमकंर पल पल करूणा बरसाए।।

प्रमुखाश्री जी का निर्देशन, हमें सफलतम करना है
मुख्यमुनि की सतत प्रेरणा गण प्रभावना करना है
साध्वीवर्या जी का चिंतन रंग नए अब भरना है।।

अग्रगामी अनुगामी के सेवा श्रम को विरूदाएं।
मुनिप्रवर आनंद निलय में अन्तर्दर्शन कर पाएं।

लय- जिसकी आज

मंगल भावना समारोह

नागपुर।

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की प्रेरणा एंव पावन आशीर्वाद से समणी सत्यप्रज्ञा जी एवं समणी रोहिणी प्रज्ञा जी के सानिध्य में आरणी निवासी मुमुक्षु चंदन बाई का मंगल भावना समारोह तेरापंथ समाज नागपुर की ओर आयोजित किया गया। जिनकी दीक्षा आगामी 23 अप्रैल 2026 को लाडनूं में आचार्य श्री महाश्रमण जी के सानिध्य में सम्पन्न होगी।

सभी संस्था के पदाधिकारियों एवं मुमुक्षु के पारिवारिक जनो, अन्य समाज से पधारे श्रावकों ने मुमुक्षु चंदन बहन के प्रति अपनी मंगलकामना भावना प्रेषित करके उनका वर्धापन किया। तत्पश्चात तेरापंथ महिला मंडल ने एक गीतिका के द्वारा उनके प्रति मंगल भावना व्यक्त की।

समणी सत्य प्रज्ञा जी एवं समणी रोहिणी प्रज्ञा जी ने बताया पारमार्थिक संस्था लाडनूं में वैरागी का जीवन भी एक दीक्षित के जैसा ही मर्यादित एवं अनुशासित होता है। समणी जी मुमुक्षु बहन के भावी जीवन के प्रति मंगल भावना व्यक्त करते कहा आप आध्यात्मिक पथ पर गुरु इंगित चलते हुए अपना जीवन संवारो। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा प्रमिला मालू एवं मंत्री सुमन मालू द्वारा मुमुक्षु बहन का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन प्रेमलता सेठिया ने किया।

रंगों से उपचार व मंत्रों से समाधान कार्यशाला का समायोजन

मरीन लाईन्स, मुम्बई।

युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि कुलदीपकुमार जी, मुनि मुकुल कुमार जी के सान्निध्य में रंगों से उपचार मंत्रों से समाधान कार्यशाला का समायोजन किया गया। इस कार्यशाला में ऐतिहासिक उपस्थिति रही। कार्यक्रम का मंगल शुभारंभ मुनि कुलदीप कुमार जी के नमस्कार महामंत्र से किया।

दक्षिण मुंबई महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया मुनि कुलदीप कुमार जी ने वृहद मंगलपाठ कराते हुए कहां हर व्यक्ति को नए संकल्पों के साथ नव वर्ष की शुरुआत करनी चाहिए दक्षिण मुंबई का श्रावक समाज निष्ठावान श्रद्धावान और समर्पित है मुनि मुकुल कुमार जी ने अपने ओजस्वी स्वर में मंत्रानुष्ठान कराते हुए सबके मन को मंत्रो से बांध लिया।

अनुष्ठान में मंत्रों की विशिष्ट ध्वनि से रोमांच एवं अती आनंद का अनुभव कर रहे थे।

मुनि मुकुल कुमार जी ने विषय का प्रतिपादन करते हुए कहा- रंगों का प्रभाव बहुत सूक्ष्म किन्तु अत्यंत शक्तिशाली होता है। प्रत्येक रंग अपनी एक विशिष्ट तरंग और मनोवैज्ञानिक प्रभाव रखता है। जैसे हरा रंग, शांति संतुलन का प्रतीक है। यदि व्यक्ति अपने जीवन में आवश्यक भाव के अनुसार रंगों का चयन करता तो वह धीरे-धीरे अपने मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ में सकारात्मक परिवर्तन का अनुभव कर सकता है रंग जहाँ मनोभूमि को प्रभावित करते है वही मंत्र चेतना को स्पंदित कर भीतर की शक्ति को जागृत करते हैं।

इस प्रकार रंगों से उपचार और मंत्रों से उत्थान दोनों मिलकर व्यक्ति के जीवन में नई ऊर्जा, आशा, और संतुलन का संचार करते हैं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष सुरेश डागलिया ने पधारे हुवे अथितियों का स्वागत किया, फाउंडेशन के कार्याध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, महिला मंडल अध्यक्षा लतिका डागलिया, सभा के उपाध्यक्ष नितेश धाकड़ ,अणुव्रत ट्रस्ट के ट्रस्टी सुमतिचंद गोठी आदि ने मंगल भावना प्रेषित कि अशोक बरलोटा एवं भावना मेहता का सम्मान किया आभार ज्ञापन तेयुप के अध्यक्ष गिरीश शिशोदिया ने किया कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान

■ **सूरत।** लाडनूं निवासी स्व. अशोक बोरड़ की सुपुत्री अभिलाषा जैन एवं सुजानगढ निवासी सूरत प्रवासी विमल सिंह कमला देवी भूतोडिया के सुपुत्र प्रवीण कुमार भूतोडिया के संयुक्त नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक बजरंग बैद, पंकज बुच्चा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **सूरत।** बागोर निवासी श्री नवीन कैलाशचंद मारू एवं सूरत प्रवासी अक्षय जैन वह आशीष जीरावाला के संयुक्त नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मचंद सामसूखा, अभय बोथरा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **सूरत।** मवसारी(वाव) निवासी सूरत प्रवासी राजश भाई परीख के सुपुत्र परीख का शुभ पाणिग्रहण संस्कार वाव निवासी बड़ौदा प्रवासी विक्रम भाई मेहता की सुपुत्री क्रिना मेहता के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मचंद श्यामसुखा, कांतिभाई मेहता, मनीष कुमार मालू, अपूर्व मोदी, बजरंग बैद, पंकज बुच्चा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **सूरत।** बीकानेर निवासी सूरत प्रवासी धर्मेंद्र सिंह बैद की सुपुत्री छवि बैद का शुभ पाणिग्रहण संस्कार बनकोड़ा निवासी बनकोड़ा प्रवासी महेंद्र कोठारी के सुपुत्र अविन कोठारी के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश डाकलिया, धर्मचंद सामसूखा, मनीष कुमार मालू ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

तप संपूर्ति अनुष्ठान

■ **गंगाशहर।** मंजुलता सेठिया के वर्षीतप की तपस्या का तप संपूर्ति अनुष्ठान जैन संस्कार विधि द्वारा पारिवारिकजन की उपस्थिति में जैन संस्कारक विपिन बोथरा, देवेन्द्र डागा, दीपक महनोत (सिलीगुड़ी) एवम प्रशिक्षु संस्कारक अनिल बैद ने उत्साहवर्धक जैन मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

नामकरण संस्कार

■ **उत्तर कोलकाता।** सरदारशहर निवासी एवं उत्तर कोलकाता प्रवासी नीतेश –कृति डागा के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक बिनोद आंचलिया ने नमस्कार महामंत्र से शुभारंभ करते हुए संपन्न कराया।

■ **जयपुर।** आरती - मोहित गंग की सुपुत्री एवम् विमलेश देवी-स्वर्गीय जिनेन्द्र गंग की सुपौत्री का नामकरण संस्कार उनके आवास जयपुर में धी संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने जैन संस्कार विधि से मंगल भावना पत्रक स्थापित करवाकर सम्पूर्ण प्रक्रिया को सम्पन्न करवाया।

नये वर्ष का अनुष्ठान व बृहद् मंगल पाठ का सफल आयोजन

उत्तर कोलकाता।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में नये वर्ष का अनुष्ठान व बृहद् मंगल पाठ का आयोजन विनायक एनक्लेव में हुआ।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमारजी ने कहा इस दुनिया में नाना प्रकार की शक्तियों है। शक्ति के बिना व्यक्ति का मूल्य कम हो जाता है। शक्ति विहीन अपने आपको दयनीय व असहाय भी अनुभव करता है। शक्ति के बिना व्यक्ति पंगु के समान होता है। शक्ति के बिना भक्ति भी नहीं होती है। मन की शक्ति वचन की शक्ति, काय की शक्ति। काय की शक्ति के बिना प्रवृत्ति करने में व्यक्ति असमर्थता का अनुभव करता है। वचन की शक्ति के बिना समाज में भी अधिक मूल्य नहीं होता है। मन की शक्ति के बिना व्यक्ति सोच नहीं पाता है। शक्ति का सदुपयोग होना चाहिए।

मुनि ने आगे कहा- बाध्य शक्ति के साथ आंतरिक शक्ति का विकास जरूरी है । शक्ति के जागरण का समय है-नवरात्र नवरात्रि में नौ दैविक शक्तियों की पूजा अर्चना करते हैं। इसके साथ साथ यह भी माना जाता है कि सम्पूर्ण सृष्टि की दैविक शक्तियां हमारे भीतर विद्यमान हैं । जप, तप, ध्यान, स्वाध्याय, अनुप्रेक्ष के द्वारा शक्ति को जागृत करें। इन दिनों में प्रकृति में भी सहज परिवर्तन घटित होता है । मुनि ने आगे कहा- आज नया वर्ष है। वि.स. 2083 प्रारंभ हो चुका है । व्यक्ति को पिछले वर्ष की लेखा जोखा करना चाहिए।

नया वर्ष सबके लिए कल्याणकारी हो, मंगलकारी हो' यही शुभेच्छा करता हूँ। मुनि ने मंगलपाठ सुनाया। मुनि परमानंदजी ने कहा- हिन्दू नव वर्ष सूर्योदय के साथ प्रारंभ होता है जो प्रकाश व जागरण का प्रतीक है। मुनि कुणाल कुमार जी ने मधुर संगान सुनाया। विनायक एनक्लेव की बहिनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मुनि परमानंद जी की संचालन किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
06 अप्रैल - 12 अप्रैल 2026

संबोधि

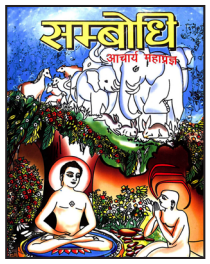

परिशिष्ट

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

मुमुक्षा के साथ-साथ स्वस्थ शरीर की आवश्यकता है। 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः' - दुर्बल व्यक्ति आत्मा को उपलब्ध नहीं हो सकता। महावीर ने कहा है- 'सरीरमाहु नाव त्ति'- संसार सागर को पार करना है तो जीर्ण-शीर्ण नौका से काम नहीं चल सकता। नाव मजबूत चाहिए। शरीर नाव है। जितेन्द्रियता, शान्तचित्तता, स्थिरासन, मनोजयत्व आदि गुण भी ध्याता के लिए अनिवार्य है।

गृहस्थ या मुनि, कोई भी व्यक्ति हो यदि उपरोक्त गुणों से सम्पन्न न हो तो ध्यान का मार्ग उसके लिए अशक्य है। स्वामी रामकृष्ण ने अपने गहरे अनुभवों से कहा है-गृहस्थ में रहते हुए ईश्वर की प्राप्ति करना कठिन है। ईश्वर की प्राप्ति के बाद कहीं भी रहा जा सकता है, कोई कठिनाई पैदा नहीं होती। प्रारंभ में तो समय-समय पर महीने, दो महीने, छह महीने, वर्षभर उसे सर्वथा गृहस्थ जीवन से मुक्त होकर एकांत में तीव्र भावना के साथ ईश्वर को पुकारना चाहिए।

जीसस ने कहा है-'द्वार खटखटाओ, अवश्य खुलेगा।' 'ईश्वर पुकार सुनेगा। आचार्य शुभचंद्र ने गृहस्थ जीवन में विशिष्ट ध्यान की संभाव्यता का बड़े सचोट शब्दों में निषेध किया है। वे कहते हैं- 'आकाश में पुष्प और गधे के सींग की किसी तरह संभाव्यता स्वीकार की जा सकती है, किन्तु गृहस्थाश्रम में ध्यान की सिद्धि किसी भी देश तथा काल में संभव नहीं है।' इसके अनेक कारण प्रस्तुत किए हैं-

(१) सतत स्त्रियों का सम्पर्क रहता है।

(२) व्यक्ति इन्द्रिय विषयों में वर्तता है।

(३) आजीविका आदि की चिंता रहती है।

(४) प्रमाद-जागरूकता का अभाव है।

(५) मोह-ममत्व से घिरा रहता है।

(६) जीवन क्लेश और कष्ट-बहुल होता है।

(क्रमशः)

आचार्यश्री महाश्रमण जीवन प्रसंग

प्रातराश इस जीव ने अनंत बार किया होगा अपितु!

पश्चिम ओड़िशा यात्रा के दौरान मार्गवर्ती गांवों में खड़ी भावाभिभूत जनता को प्रतिबोध देने आदि के कारण गन्तव्य तक पहुंचने में कुछ विलम्ब हो जाता। धूप भी प्रायः प्रखर बन जाती। इस संदर्भ में साध्वीवर्याजी ने एक दिन पूज्यप्रवर से निवेदन किया कि आचार्यप्रवर ने गत कल की शाम को कुछ आहार किया था और आज करीब अठारह घंटों बाद कुछ ग्रहण कर रहे हैं। यह अन्तराल बहुत लंबा हो जाता है और आजकल गर्मी भी बढ़ जाती है। पूज्यप्रवर ने उस समय मुस्कान के साथ उस बात को टाल दिया।

दो दिन बाद आचार्यप्रवर ने साध्वीवर्याजी से पूछा– तुम उस दिन क्या कह रही थी?

साध्वीवर्याजी– अपनी बात दोहराई।

आचार्यप्रवर– मार्ग में इतने लोग खड़े रहते हैं। उन्हें कुछ धर्म की बात बताने, संकल्प करवाने आदि में कुछ समय लग जाता है।

साध्वीवर्याजी– इससे पूज्यप्रवर के प्रातराश में बहुत विलम्ब हो जाता है।

आचार्यप्रवर– अरे! इस जीव ने अनंत बार प्रातराश कर लिया होगा। प्रातराश तो थोड़ी देरी से भी हो सकता है, किन्तु उन लोगों को धर्म के विषय में सुनने-जानने का अवसर कब मिलेगा?

पूज्यप्रवर की जनकल्याण की भावना के सामने साध्वीवर्याजी सहित उपस्थित सभी व्यक्ति नतमस्तक थे।

श्रमण महावीर

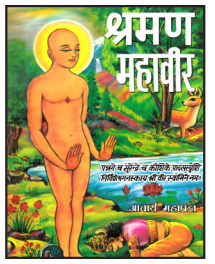

सतत जागरण

'क्या यह एक पल में ही घटित हो जाता है?'

'भन्ते ! दीप का बुझना और अंधकार का होना एक ही घटना है। इसमें अंतराल नहीं है।'

'गौतम! मैं यही कहता हूं कि जागरण का दीप जिस क्षण बुझता है, उसी क्षण चित्तभूमि में अन्धकार छा जाता है।'

'भन्ते! जागरण के क्षण में क्या होता है?'

'अंधकार प्रकाश में बदल जाता है।'

'भन्ते ! क्या मनुष्य का कृत बदलता है?'

'मनुष्य जागरण के क्षण में होता है तब चित्त आलोकित हो उठता है। साथ-साथ पुण्य के संस्कार प्रबल होकर पाप के परमाणुओं को पुण्य में बदल डालते हैं। यह है पाप का पुण्य में संक्रमण। यह है कृत का परिवर्तन ।'

'भंते! प्रमाद के क्षण में क्या होता है?'

'प्रमाद के क्षण में मनुष्य का चित्त अन्धकार से आच्छन्न हो जाता है। साथ-साथ पाप के संस्कार प्रबल होकर पुण्य के परमाणुओं को पाप में बदल डालते हैं। यह है पुण्य का पाप में संक्रमण। यह है कृत का परिवर्तन।'

'भन्ते! यह बहुत ही आश्चर्यकारी घटना है। यह कैसे सम्भव हो सकती है?'

'यह संभव है। इसी में हमारे पराक्रम की सार्थकता है। यह हमारे पुरुषार्थ की नियति है। इसे कोई टाल नहीं सकता। इसलिए मैं कहता हूं-यह अप्रमाद की ज्योति को अखंड रहने दो। ध्यान रखो, यह पलभर के लिए भी बुझ न पाए।'

चक्षुदान

भगवान ज्योतिपुंज थे। उनके सम्पर्क में आ नए-नए दीप प्रज्वलित हो रहे थे और बुझते दीप फिर ज्योति प्राप्त कर रहे थे।

दीप का जलना और बुझना सामान्य प्रकृति है। भगवान इसे पसन्द नहीं करते थे। उनकी भावना थी कि चेतना का दीप जले, फिर बुझे नहीं। वह सतत जलता रहे और जलते-जलते उस बिन्दु पर पहुंच जाए, जहां बुझने की भाषा ही नहीं है।

मेघकुमार सम्राट् श्रेणिक का पुत्र था। वह भगवान की सन्निधि में गया। उसकी सुप्त चेतना जाग उठी। उसकी चेतना का प्रवाह ऊर्ध्वमुखी हो गया। ढक्कन से ढका हुआ दीप हजारो-हजारों विवरणों से ज्योति विकीर्ण करने लगा। वह सतत प्रज्वलित रहने की दिशा में प्रस्तुत हुआ। हमारी भाषा में मुनि बन गया।

दिन जागृति में बीता। रात नींद में। आखों में नीद नहीं आई। वह चेतना के दीप पर छा गई। चक्षु-दीप पर छाने वाली नींद सूर्योदय के साथ टूट जाती है। पर चेतना के दीप पर छा जाने वाली नींद नहीं टूटती है-हजारों-हजारों दिन आने पर भी और हजारों-हजारों सूर्योदय हो जाने पर भी। नींद के क्षणों में मेघकुमार की चेतना का प्रवाह अधोमुखी हो गया। वह भगवान के पास आया। भगवान ने देखा, उसका चेतना-दीप बुझ रहा है। भगवान बोले- 'मेघ! तुम अपनी जागृत चेतना को लौटाने मेरे पास आए हो। क्यों, यह सही है न?'

'भंते ! कुछ ऐसा ही है।'

'मेघ ! तुम्हारी स्मृति खो रही है। तुम हाथी के जन्म में जागृति की दिशा में बढ़े थे और अब मनुष्य होकर, मगध सम्राट के पुत्र होकर, सुषुप्ति की दिशा में जाना चाहते हो, क्या तुम्हारे लिए उचित होगा?'

भगवान की बात सुन मेघकुमार का मानस आन्दोलित हो गया। वह चित्त की गहराइयों में खो गया। उसे कुछ विलक्षण-सा अनुभव होने लगा। ऐसा होना जरूरी था। उसके मानस को आश्चर्य में डाले बिना, आन्दोलित किए बिना, उसे मोड़ देना संभव नहीं था। चेतना जागरण के रहस्यों को जानने वाले ऐसा कर व्यक्ति को खोज की यात्रा में प्रस्थित कर देते हैं। मेघकुमार प्रस्तुत को भूल गया। जो बात भगवान को कहने आया था, वह उसके हाथ से छूट गई। उसके मन में जिज्ञासा के नए अंकुर फूट पड़े। उसकी भीतरी खोज आरम्भ हो गई। उसके मानवीय पर्याय पर हाथी का पर्याय आरोहण कर गया।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

कालूयशोविलास में
तत्त्व निरूपण

स्त्री को भी मोक्ष का अधिकार है

श्वेताम्बर जैन परम्परा का यह स्पष्ट मत है कि स्त्री भी मोक्ष प्राप्त कर सकती है। दिगम्बर मतानुसार स्त्री मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकती। कालू यशोविलास के चौथे उल्लास की चौथी गीतिका में उल्लेख है कि पूज्य कालूगणी एक बार कालू (मारवाड़ का एक कस्बा) पधारे। मध्याहन-कालीन प्रवचन में गुरुवर ने कहा- नारी भी मुक्ति प्राप्त कर सकती है। यह सुन प्रवचन में उपस्थित दिगम्बर-परम्परा के अनुयायी जैन श्रावक चौंके। पूज्य आचार्यश्री ने दिगम्बर ग्रन्थ के आधार पर स्त्री का मोक्ष गमन सिद्ध किया। उन्होंने गोम्मटसार जीवकाण्ड की यायात्रयी प्रस्तुत की।

गणिवर गोम्मटसार जो, मान्य दिगम्बर ग्रन्थ,
साक्षि-रूप रख सामने, वर्णवियो विरतंत।।
जीवकाण्ड सुविचार में, गाथा-त्रयी अवीण।
श्रपकश्रेणि विवरण-वरण, देखो प्रगट प्रवीण।
पुरुष-वेद, स्त्री-वेद-युत, अरु जो कृत्रिम क्लीव।
एक समय में खपक लै, एता-एता जीव।
अप्रतिपाती है सदा क्षपक-श्रेणि को बाट।
तो ललना जनहित-जड़्यो, क्यूं शिवगमन-कपाट?।।

(का. ४/४/८-११)

कालूयशोविलास का तत्त्व निरूपण विशाल एवं वैविध्यपूर्ण है। उसका संक्षिप्त निदर्शन प्रस्तुत निबंध में किया गया है।

तेरापथ में आचार्य पदारोहण : एक पर्यवेक्षण

सत्य के प्रति अपना सम्पूर्ण समर्पण करने वाला व्यक्ति सत्य का साक्षात्कार कर सकता है। परन्तु वह समर्पण कुछ ही व्यक्तियों में हो सकता है, सब में संभव नहीं है। आचार्य भिक्षु जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के प्रवर्तक एवं प्रथम आचार्य थे। वे तपस्वी, क्रांतिकारी और सत्यसंधित्सु थे, ऐसा इतिहास पढ़ने से ज्ञात होता है। उन्होंने स्वप्रवर्तित संघ की सुव्यवस्था एवं शुद्ध संयम-आराधना के लिए अनेक मर्यादाओं का निर्माण किया। उन मर्यादाओं को तेरापंथ का हृदय कहा जा सकता है।

तेरापंथ के संविधान के अनुसार धर्मसंघ में एक ही आचार्य होता है। वर्तमान आचार्य भावी आचार्य का मनोनयन करता है। मनोनयन का प्रकटीकरण दो तरीकों से किया जाता रहा है। पहला तरीका है अपने जीवनकाल में ही भावी आचार्य की खुली घोषणा कर देना। दूसरा तरीका है भावी आचार्य का निर्णय प्रच्छन्न पत्र में लिखित रूप में छोड़ देना। इन दोनों विधियों का उपयोग हमारे धर्मसंघ के पूर्व आचार्यों ने किया है, इतिहास इसका साक्ष्य है।

धर्मसंघ के प्रथम पांच आचार्य एवं अष्टम आचार्य श्री कालूगणी ने अपने भावी आचार्य का मनोनयन खुली घोषणा के माध्यम से किया, अपने जीवनकाल में ही अपना युवाचार्य स्थापित कर दिया। सप्तम आचार्य श्री डालगणी ने अपने जीवनकाल में अपने भावी आचार्य की घोषणा नहीं की, उनके देहावसान के बाद प्रच्छन्न पत्र में लिखित मनोनयन के आधार पर श्री कालूगणी आठवें आचार्य बने। सात आचार्यों के मनोनयन का यह अति संक्षिप्त इतिहास है। अब तक हुए तेरापंथ के दस आचार्यों में से तीन आचार्यों का आचार्य-पदारोहण ऊपरलिखित द्विविध सामान्य परम्परा से भिन्न प्रकार हुआ है।

प्रथम आचार्य श्री भिक्षु किसी पूर्व आचार्य के द्वारा घोषित और मनोनीत आचार्य नहीं थे। वे किसी आचार्य के उत्तराधिकारी नहीं थे, तीर्थंकर महावीर के परम्परित उत्तराधिकारी उन्हें कहा जा सकता है। वे स्वयं तेरापंथ के संस्थापक एवं प्रवर्तक थे, अतः किसी पूर्व आचार्य के घोषित-मनोनीत उत्तराधिकारी वे हो भी नहीं सकते थे। उनकी निःस्पृहता, प्रबल वैराग्य, प्रज्ञा और सक्षमता ने उनको सहज रूप से आचार्य बना दिया, वे संघमान्य आचार्य हो गए।

सप्तम आचार्य श्री डालगणी अपने पूर्व आचार्य श्री माणकगणी द्वारा घोषित अथवा प्रच्छन्न पत्र में लिखित मनोनयन के आधार पर संस्थापित आचार्य नहीं थे। सात्त्विक दुःख और सुख की बात यह है कि डालगणी से पूर्व कुछ महीने संघ को संघपतिरहित रहना पड़ा और फिर गरिमापूर्ण तरीके से डालगणी का आचार्य के रूप में निर्वाचन हुआ। घटना की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है- (क्रमशः)

संघीय समाचारों
का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अप्रैल 2026
सप्ताह के विशेष दिन

15 अप्रैल
भगवान अनंतनाथ जन्म कल्याणक

16 अप्रैल
भगवान अनंतनाथ दीक्षा एवं केवलज्ञान, भगवान कुन्थुनाथ जन्म कल्याणक

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
06 अप्रैल - 12 अप्रैल 2026

267वें आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर विविध आयोजन

भिक्षु बोधि स्थल,राजनगर

267वें भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर भिक्षु बोधि स्थल प्रांगण में जन संबोधन में मुनि प्रसन्नकुमार जी ने कहा - आचार्य भिक्षु ने अपने गुरु के साथ 18 माह तक चर्चा वार्ता कर आखिर आचार विचार पर पूर्ण सहमति नही बनने पर आज राम नवमीं के दिन बगड़ी (पाली मारवाड़) में साधु समाज मे आचार्य शिथिलता के खिलाफ धर्म क्रांति की। तत्कालीन स्थानक वासी समाज गुरु रुगनाथ से प्रेम पूर्व अलग रास्ता अपनाया।यह तो स्वाभाविक था सत्य की क्रान्ति का विरोध होगा। साधु व समाज का संघर्ष होगा। आचार्य भिक्षु एवं उनके साथी संतो को प्रथम दिन ही ठहरने के लिए स्थान नही मिला। जैन संतो का अपना कोई मकान नही होता है। यही तो क्रांति थी,क्यों कि स्थानक मठ बना के बैठना अपना नाम का इसी के खिलाफ आवाज उठाई। आखिर प्रथम दिन की रात जैतसिंह जी ठाकुर की छतरी (श्मशान घाट) बगड़ी में ही रात बिताई। जगत जिसे अपनी मंजिल का अन्तिम स्थान समझता है,आचार्य भिक्षु उसे अपन मंजिल प्रथम स्थान बनाया। जहा सीमा समाप्त होती, आचार्य भिक्षु ने वही से प्रारम्भ किया है। श्मशानों में जनमती है क्रांति व बनता है इतिहास महान।

आज का भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस राजनगर के उस समय के मुख्य श्रावकों की प्रेरणा का सुफल है। शिथिला चार के खिलाफ धर्म क्रांति सबसे पहले राजनगर के निष्ठाशील श्रावकों ने की थी। श्रावकों की प्रेरणा पाकर शास्त्रों के आधार से क्रांति की। इस अवसर पर भिक्षु बोधि स्थल के अध्यक्ष हर्षलाल जी नवलखा,अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ.महेन्द्र कर्णावट, अशोक डूंगरवाल, महिला मंडल,युवती मंडल ने भी विचार रखे। मुनि प्रीतकुमार जी ने आचार्य भिक्षु के अदम्य साहस निष्ठा का उल्लेख किया। कार्यक्रम का संयोजन भिक्षु बोधि स्थल मंत्री सागरमल कावड़िया ने किया।

इरोड

स्थानीय तेरापन्थ भवन में आयोजित धर्मसभा में उपासक प्रकाश पारख ,सभा अध्यक्ष जवेरीलाल भंसाली, मंत्री दुलीचंद पारख, सुरेंद्रजी भंडारी, महिला मण्डल अध्यक्षा समता जिरावला, वीणा भूतोडिया आदि ने अपनी प्रस्तुति देकर आचार्य श्री भिक्षु स्वामीजी का गुणगान व्यक्त करते हुए ॐ भिक्षु जय भिक्षु के जप का कार्यक्रम चला। श्रावक एवं श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

बीकानेर, गंगाशहर

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु का 267 वां अभिनिष्क्रमण दिवस शुक्रवार को बीकानेर और गंगाशहर में अत्यंत श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। तेरापंथ समाज के लिए यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण आध्यात्मिक पर्व है, जो त्याग और सत्य क्रांति के प्रतीक के रूप में पहचाना जाता है। अध्यात्म और क्रांति का संगम गंगाशहर स्थित बोथरा भवन में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में मुनि अमृत कुमार जी ने आचार्य भिक्षु के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आज ही के दिन (विक्रम संवत 1817 की चैत्र शुक्ला नवमी) स्वामी जी ने शिथिलाचार को त्याग कर सत्य की खोज में आचार्य रघुनाथ जी के संघ से 'अभिनिष्क्रमण' किया था। उनकी इसी वैचारिक क्रांति ने 'तेरापंथ' जैसे अनुशासित और संगठित धर्मसंघ की नींव रखी। आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर फरमाते हुए मुनि अमृत कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ आचार्य भिक्षु की तपस्या का फल है। राम नवमी और आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस राम और आचार्य भिक्षु में बहुत समानताएं है राम ने कितने कष्ट सहन किये 14 वर्षों का वनवास काटा वैसे ही आचार्य भिक्षु ने अनेकों कष्ट सहन किये। संघर्षों को न्योता देकर तेरापंथ बनाया। उन्होंने कहा कि तेरापंथ का नामकरण भी किसी और ने दिया। शमशान में वास किया। बगड़ी में किसी ने जगह नहीं दी। शमशान में अभय की साधना की। हाटों में प्रवास किया दुकानों में चातुर्मास किया सड़को पर प्रवचन दिया। ऐसे अनेकों कष्ट सहन किये। जब रघुनाथ ने कहा कि आगो थारो पीछो म्हारो तब आचार्य भिक्षु ने कहा कि अब मुझे और क्या चाहिए जब गुरू मेरे पीछे है तो अब मुझे क्या डर।

आचार्य भिक्षु किसी से नहीं डरे। हमें सिर्फ तेरापंथ का नाम या आचार्य भिक्षु का नाम लेने से नहीं चलेगा उनके सिद्धान्तों को समझना होगा उन्हे क्रियान्वित करना होगा। तेरापंथ धर्मसंघ की मजबूती का मुख्य आधार कार्यक्रम में उपस्थित मुनि विमल विहारी जी , मुनि प्रबोध मुनि जी , मुनि उपशम जी और विद्वानों ने कहा कि आचार्य भिक्षु केवल एक संप्रदाय के प्रवर्तक नहीं थे, बल्कि वे एक महान समाज सुधारक और तत्वज्ञान के मर्मज्ञ थे। उन्होंने 'एक गुरु, एक विधान' का जो मार्ग दिखाया, वह आज भी तेरापंथ धर्मसंघ की मजबूती का मुख्य आधार है। मुनि प्रबोध कुमार जी ने मंगलभावनाओं का संगान किया।

राजनगर के श्रावक ही भिक्षुस्वामी के अभिनिष्क्रमण के निमित बने। तेरापंथी महासभा के संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़ ने कहा कि राजनगर के श्रावक ही भिक्षुस्वामी के अभिनिष्क्रमण के निमित बने। आचार्य भिक्षु ने सत्य व आगमों में वर्णित जैन सिद्धांतों व जैन जीवनशैली के लिए क्रान्ति की जिसका ही फल तेरापंथ के रूप में सामने आया। उन्होंने कहा भिक्षु स्वामी ने युग के अनुरुप निर्णय लेने की व्यवस्था अपने द्वारा लिखित मर्यादावली में कही जिसके कारण आचार्य भिक्षु के बाद 10 आचार्यों ने तेरापंथ को नयी उंचाईयों तक पहुंचाया है। उपासिका कनक देवी गोलछा ने भी अपने विचार रखते हुए आचार्य भिक्षु को भावांजलि अर्पित की। समारोह में सभी उपस्थितजनों ने सामायिक करके आचार्य भिक्षु को भावांजलि अर्पित की।

गांधीनगर, बेंगलुरु

युगप्रधान शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमार जी ठाणा 2 के मंगल सानिध्य में शांतिनगर हेरिटेज सिग्नेचर अपार्टमेंट में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गांधीनगर द्वारा आचार्य श्री भिक्षु का 267वां अभिनिष्क्रमण दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनि पुलकित कुमार ने कहा आज के दिन आचार्य श्री भिक्षु के कदम अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़े थे। वें आत्म आराधना के प्रति जागरूक साधक थे। चैत्र शुक्ला नवमी के दिन उन्होंने भगवान महावीर की सत्य वाणी को सामने रखकर धर्म क्रांति के लिए राजस्थान के बगड़ी गांव में प्रस्थान अर्थात् अभिनिष्क्रमण किया था। मुनि श्री ने आगे कहा आचार्य श्री भिक्षु ऐसे महापुरुष थे जिनके पुरुषार्थ से तेरापंथ चमक उठा, उन्होंने शुद्ध आचार और सम्यक विचार की धर्म क्रांति की, इसी का परिणाम है तेरापंथ का उदय । उन्होंने साधुओं की आचार शिथिलता पर प्रहार किया। अनेक संघर्षकारी परिस्थितियों में भी उनकी कलम चलती रही जिसे हम आज भिक्षु ग्रंथ रत्नाकर के रूप में देख रहे हैं उन्होंने 38000 पद्य रचनाओं के माध्यम से आचार की चौपाई, अनुकंपा दान दया की चौपाई आदि अनेक सम्यक्त्व को मजबूत करने वाली रचनाओं को जनता के सामने प्रस्तुत किया । मुनि आदित्य कुमार ने भक्ति गीत के माध्यम से विचार रखें। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में दक्षिण कर्नाटक आंचलिक महासभा प्रभारी महेंद्र दक ने कहा आचार्य श्री भिक्षु के सिद्धांतों को हर श्रावक समझने का प्रयास करें। तेरापंथ दर्शन अपने आप में नया दर्शन है इसे समझने से कोई भी व्यक्ति जीवन में भटक नहीं सकता। महेंद्र दक ने बताया मुनि पुलकित कुमार जी बेंगलुरु के उपनगरों में विचरण करते हुए अच्छी सार संभाल कर रहे हैं आने वाले समय में इसकी सार्थकता रहेगी। महिला मंडल शांति नगर की बहनों द्वारा मंगलाचरण के रूप में भिक्षु अष्टकम् की प्रस्तुति दी गई। प्रज्ञा संगीत सुधा के सदस्यों ने भिक्षु भक्ति गीत प्रस्तुत किया। सभा उपाध्यक्ष दिनेश पोखरणा ने स्वागत वक्तव्य दिया । सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने मुनि श्री की सम्पूर्ण बैंगलोर की सार संभाल की जानकारी प्रदान की । कार्यक्रम संयोजक जितेंद्र घोषल से गीतिका प्रस्तुत कर सबके प्रति आभार ज्ञापन किया । कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने किया।

उत्तर मध्य कलकत्ता

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सानिध्य में 267वाँ भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस कार्यक्रम जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा मध्य-उत्तर कोलकाता द्वारा ओसवाल भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- अठारहवी सदी के महापुरुषों में एक शक्तिशाली मेघा संपन्न आचार्य हुए है भीखण जी । वे हमारे आराध्य तेरापंथ धर्म संघ के संस्थापक थे। वे बचपन से ही नैसर्गिक प्रतिभा के धनी थे। बचपन में लोग उन्हें ज्ञानी गुरु कहते थे।

उन्होंने भरयौवन में जैन भागवती दीक्षा ली। वे आचार, विचार, संस्कार व्यवहार से संपन्न थे। साहवाचार से सजग रहते हुए गुरु सान्निधि में जैन आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन किया। वे मनोविज्ञानी व तार्किक व दार्शनिक थे। लोगों को समझाने की अद्भूत कला थी। मुनिश्री ने आगे कहा आचार्य भिक्षु सत्य के पुजारी थे। उनका चित्त हमेशा प्रसन्न रहता था। उनका अन्तकरण करुणा से पूरित था। उनकी वाणी अमृतमयी थी, उनका जीवन परोपकार के लिए समर्पित था। उनके रोम रोम में जिनवाणी बोलती थी। उनके जीवनमें अनेक कष्ट आए उत्तार चढाव आए फिर भी हिमालय की तरह अडोल रहे। उनकी साधना निर्मल व उनका जीवन दर्शन प्रेरणास्रोत था। आचार विचार में मतभेद होने के कारण उन्होंने आज के दिन 5 संतों के साथ अभिनिष्क्रमण किया। आज रामनवमी है। भगवान राम आदर्श पुरुष थे। इस अवसर पर मुनिश्री परमानंद जी ने कहा- रामनवमी का दिन शक्ति और भक्ति के संतुलन का दिन है। आचार्य भिक्षु ने आचार-विचार को शुद्धि के लिए अभिनिष्क्रमण कर महान कार्य किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर महासभा के प्रधान न्यासी सुरेश गोयल व कलकत्ता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कलकत्ता-पूर्वांचल

तेरापंथ धर्म संघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु स्वामी के 267 वें अभिनिष्क्रमण दिवस के अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कलकत्ता-पूर्वांचल)ट्रस्ट ने सभा परिसर तुलसी वाटिका में भक्ति संध्या का आयोजन किया।सर्व प्रथम अध्यक्ष संजय कुमार सिंघी ने सभी का अभिवादन करते हुए इस अवसर पर आचार्य श्री भिक्षु के प्रति अपनी भावांजली प्रस्तुत की।तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल के अध्यक्ष राजीव बोथरा ने भी श्रद्धा सुमन अर्पित किए। पूर्वांचल सभा के सांस्कृतिक उपक्रम जैन कला संगम और पूर्वांचल स्वर लहरी के संगायकों ने अपनी सुमधुर वाणी से श्रावक श्राविका समाज को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में सभा न्यासी अमर सिंह सिंघी, अशोक जैन,कोलकाता सभा के संगठन मंत्री ललित बैद ,तेयुप के सह मंत्री मनोज सामसुखा आदि की सराहनीय उपस्थिति रही।

जैन कला संगम के संयोजक रंजीत बैद अशोक जैन, संजय सिंघी, धीरज मालू, मनोज भादानी, दिलीप चोपड़ा, राजुल देवी सिंघी, हेमलत खटेड, सुनीता दूगड आदि ने अपनी गीतिकाओं के माध्यम से कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए। श्रावक समाज ने अच्छा लाभ उठाया। सभा की तरफ से सभी के प्रति आभार प्रकट किया गया और सभी को भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस पर रैली में उपस्थित रहने के लिए अनुरोध किया गया।

267वें आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर विविध आयोजन

उत्तर चेन्नई

आचार्य श्री भिक्षु 267 वां अभिनिष्क्रमण दिवस (भिक्षु चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में धम्म जागरण का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा उत्तर चेन्नई के तत्वाधान में तेरापंथ भवन तंडियारपेट मे आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुरुआत ओम भिक्षु जय भिक्षु जप से हुआ, पधारे हुए श्रावक समाज का स्वागत अध्यक्ष इंदरचंद डूंगरवाल द्वारा किया गया। उपस्थित सभी ने भिक्षु स्वामी के कई गीतों का सामूहिक संगान किया शांता गेलड़ा, मंजू दक और कल्पना बाफणा ने गीतिका की विशेष प्रस्तुति दी । गायक एवं उपस्थित सभी का उत्तर चेन्नई सभा द्वारा सम्मान किया गया । सभा अध्यक्ष इंदरचंद डूंगरवाल, उपाध्यक्ष दिलीप गेलड़ा, सह मंत्री कमलेश सिंघवी और संगठन मंत्री सुनील सकलेचा की गरिमायी उपस्थित रही ।कार्यक्रम का कुशल संचालन कमलेश सिंघवी और धन्यवाद ज्ञापन दिलीप गेलड़ा ने दिया।

टोहाना

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ भवन में 267वे आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस का आयोजन अध्यक्ष विजय कुमार जैन की अध्यक्षता मे किया गया। सर्वप्रथम नवकार महामंत्र का उच्चारण किया गया।इसके पश्चात ओम भिक्षु जय भिक्षु एवं विघ्नहरन का जप अनुष्ठान किया गया। इसके पश्चात श्रावक समाज द्वारा आचार्य भिक्षु का गुणगान करते हुए उनके बारे में वक्तव्य एवं गीत भजनों द्वारा स्तवन किया गया। सभा के मंत्री सुभाष जैन ने कहा कि आज के दिन आचार्य भिक्षु ने सत्य क्रांति का बिगुल बजाते हुए और मर्यादाओं को अक्षुण रखने के लिए अभिनिष्क्रमण किया था और अभिनिष्क्रमण करते ही आंधी तूफान ने उनका स्वागत किया था। जिस व्यक्ति का स्वागत आंधी तूफान करते हैं निश्चित रूप से वह एक महान नायक एवं महान संत या महामानव बनता है। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु के द्वारा सहे कष्टो के कारण ही आज तेरापंथ रूपी वृक्ष ने एक विराट वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया है और आज तेरापंथ धर्म संघ विश्व स्तरीय धर्मसंघ बन गया है।

वाशी

भिक्षु के प्रतिरूप आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वी निर्वाणश्रीजी ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की और भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा जेतसिंह जी छतरीयों से आचार्य भिक्षु ने एक नया अभियान शुरू किया। पौरूष की स्याही से उन्होंने वक्त के फलक पर नया अभिलेख लिखा गुरु की आक्रोषपूर्ण वाणी को भी उन्होंने आशीर्वाद रूप में स्वीकार किया निरंतर आचार् शुद्धि की अलख जगाई। प्रबुद्ध साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा राजनगर के घटनाक्रम में बगड़ी के अभिनिश्रमण की भूमिका रची साहस और दृढ़ संकल्प के बल पर आचार्य भिक्षु ने नया सृजन कर दिया। साध्वी लावण्य प्रभा जी ने आचार्य भिक्षु के जीवन की कठिनाइयों को घटनाओं से समझाया। साध्वी मुदित प्रभा जी ने भिक्षु स्तुति के साथ मंगलाचरण किया। साध्वी मधुरप्रभा जी ने मधुर गीत का संगान किया। भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन के भवन में 13 घंटे का जप चला मंच संचालन साध्वी कुंदनयशा जी ने किया। वाशी सभा मंत्री पवन परमार भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन के अध्यक्ष कमलेश बोहरा, वाशी महिला मंडल अध्यक्षा स्वीटी खांटेड,वरिष्ठ उपासक सोहनलाल कोठारी ने अपने उदगार व्यक्त किये।

विलेपार्ले, मुंबई

आचार्य महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या साध्वी राकेश कुमारी जी के पावन सानिध्य में भव्य धम्म जागरण का आयोजन किया गया। साध्वी राकेश कुमारी जी ने आचार्य भिक्षु के क्रांतिकारी जीवन और उनके आदर्शों पर प्रकाश डाला। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ की महत्ता बताते हुए कहा कि पूर्व जन्मों के संचित पुण्यों के फलस्वरूप ही हमें ऐसा महान धर्मसंघ और गुरु प्राप्त हुए हैं। कार्यक्रम के प्रारंभ में साध्वी मलय विभा जी ने विषय की पृष्ठभूमि रखते हुए आचार्य भिक्षु के जीवन दर्शन पर अपने विचार व्यक्त किए।

सांताक्रुज की भजन मंडली ने आचार्य भिक्षु को समर्पित भजनों की सुमधुर प्रस्तुति दी, जिससे संपूर्ण वातावरण भक्तिमय हो गया। साध्वी विपुल यशा जी एवं साध्वी चेतस्वी प्रभा जी ने सुरीली गीतिका का गान किया। श्रावक सहभागिताः विले पार्ले से उपासक गंभीरमल डागलिया और अंधेरी से सीमा जी 'रोठांगण ने भी अपनी प्रस्तुतियाँ दीं।

बोलती किताब

मर्यादा का मर्म

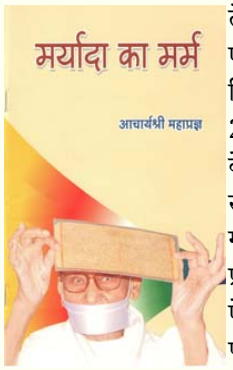

तेरापंथ संघ ने अपनी स्थापना के ढाई शताब्दी वर्ष में एक महत्वपूर्ण पड़ाव पार करते हुए समृद्ध आध्यात्मिक विरासत के संरक्षण का संदेश दिया है। 7 जुलाई 2009 को 250वाँ स्थापना दिवस मनाते हुए संघ ने केवल स्मृतियों का संकलन नहीं किया, बल्कि अपनी संघर्ष-यात्रा, सृजनशीलता और सामाजिक प्रभावों पर गंभीर मनन का मार्ग खोला। उसी वर्ष आयोजित सभा-प्रतिनिधि सम्मेलन में यह विचार बलवती हुआ कि ऐतिहासिक धरोहरों को दस्तावेज़बद्ध करना आने वाली पीढ़ियों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इन्हीं भावनाओं के साथ महासभा द्वारा "तब-ढाई शती का तेरापंथ : संघर्ष, रचना, परिणाम और प्रभाव" नामक पुस्तक प्रकाशित की गई। श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के चिंतन पर आधारित इस वृहद कृति में संघ की शुरुआत, उसके सिद्धांत, संघटन-प्रक्रिया और समाज में उत्पन्न प्रभावों का संगठित विवरण प्रस्तुत है। यह केवल घटनाओं का विवरण नहीं है, बल्कि एक दार्शनिक दृष्टि के साथ प्रस्तुत ऐतिहासिक यात्रा है, जो पाठकों को मूल्यबोध की ओर प्रेरित करती है।

ढाई शती वर्ष में यह विमर्श भी प्रारम्भ हुआ कि तेरापंथ की विशिष्ट परंपराएँ केवल संस्कारगत नहीं, बल्कि संगठन एवं अनुशासन पर आधारित हैं। मुनिश्री जयकुमारजी ने इस चिंतन की धारा को गति दी और इस प्रकार सामग्री संकलन, लेखन तथा प्रकाशन का कार्य व्यापक रूप से प्रारंभ हुआ। परिणामस्वरूप 146वें मर्यादा महोत्सव के शुभअवसर पर यह पुस्तक संघ के समक्ष नवीन भेंट के रूप में प्रस्तुत है, जो मर्यादा की परंपरा के मूल स्वर को पुनः प्रकाशित करती है।

इस पुस्तक के माध्यम से पाठक संघ के सिद्धांतों और अनुशासन की रीढ़—मर्यादा प्रणाली—के वास्तविक उद्देश्य को समझ सकेंगे। श्रद्धेय आचार्यप्रवर के मूल्य-निष्ठ चिंतन के साथ यह कृति मानव समाज में संयम, अहिंसा, और अनुशासन की भावना को जागृत करने में सक्षम है। यह केवल तेरापंथ का इतिहास नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रेरक दृष्टि है, जो वर्तमान समय के सामाजिक, धार्मिक और नैतिक संकटों के बीच मार्गदर्शन का कार्य कर सकती है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

राम और भिक्षु का...

'हे प्रभो! यह तेरापंथ'यह पथ आपका है हम तो इस पर चलने वाले पथिक है, आचार्य श्री भिक्षु द्वारा निर्मित मर्यादाएं सर्व साधु साध्वी एक आचार्य की आज्ञा में रहे, अपने-अपने शिष्य शिष्या न बनाएं आदि आज तक भी निष्ठा से पाली जा रही है।

जैन विश्व भारती : शिक्षा और साधना की 'कामधेनु' : आचार्यश्री तुलसी द्वारा स्थापित जैन विश्व भारती के स्थापना दिवस पर आचार्य महाश्रमणजी ने इसे 'कामधेनु' और 'जय कुंजर' बताते हुए फरमाया कि यह परिसर शिक्षा, शोध, ध्यान, साधना और सेवा का एक अद्वितीय केंद्र है। यहाँ से अनेक साधु-साध्वियों और शोधार्थियों ने PHD जैसी शैक्षणिक उपलब्धियां प्राप्त की हैं। यह संस्थान निरंतर लोगों के आध्यात्मिक और धार्मिक उत्थान में संलग्न है।

विशेष संकल्प और सहभागिता : कार्यक्रम के दौरान आचार्यश्री की प्रेरणा से जैन विश्व भारती के समस्त कार्यकारी स्टाफ ने एक वर्ष तक नशीले पदार्थों के सेवन का पूर्ण त्याग करने का संकल्प लिया। प्रवचन के पश्चात साध्वी मनोज्ञप्रभाजी ने अपने विचार रखे। संस्थान के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड और मुख्य न्यासी जयंतीलाल सुराणा ने भी अपने मंतव्य प्रस्तुत किए।

विशिष्ट बनने के लिए...

त्याग और तप का संकल्प: 'योगक्षेम वर्ष' के अंतर्गत आचार्यश्री ने उपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ को लाडनूं प्रवास तक विशेष संकल्प दिलाए:

नवकारसी तप: सूर्योदय के पश्चात निश्चित समय तक अन्न-जल का त्याग।

जमीकंद त्याग: आलू, प्याज, लहसुन, गाजर और मूली जैसे अभक्ष्य पदार्थों का पूर्ण त्याग।

रात्रि भोजन त्याग: संयमित जीवन शैली के लिए रात्रि भोजन का परित्याग।

वैश्विक शांति के लिए बड़ी पहल : जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति बच्छराज दूगड़ ने जानकारी दी कि आचार्यश्री की प्रेरणा से संस्थान ने युद्धरत देशों के राष्ट्राध्यक्षों को राजदूतों के माध्यम से ई-मेल भेजकर शांति की अपील की है। अहिंसा और समाधान की इस पहल की सर्वत्र सराहना की जा रही है।

अभिनंदन व मंगल भावना समारोह

कोयंबतूर।

बोरावड़ निवासी सूरत प्रवासी मुमुक्षु जहान बेताला का कोयंबतूर तेरापंथ भवन मे अभिनंदन एवं मंगलभावना समारोह रखा गया. कार्यक्रम की शुभ शुरुआत महिला मंडल के मंगलाचरण से की गई। तेरापंथ सभा कोयंबतूर के अध्यक्ष देविचंद मंडोत ने मुमुक्षु जहान एवं अन्य सभी का स्वागत किया एवं शुभ भविष्य की मंगल कामना की। इस दौरान मुमुक्षु जहान ने बताया की क़िस प्रकार इनको वैराग्य जागा. इसलिए इन्होने मुख्य मुनि के प्रती हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की। साथ ही सभी लोगो से सयम पथ अपनाने का आह्वान किया।

तेरापंथ ट्रस्ट के मुख्य न्यासी बछराज गिडिया, महिला मंडल अध्यक्षा रूपकला भंडारी आदि लोगो ने मुमुक्षु जहान के भावी आध्यात्मिक जीवन के प्रती शुभकामनायें प्रस्तुत की। तेरापंथ सभा के द्वारा माल्यार्पण एवं शाल्यारपर्ण द्वारा अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन बबिता गुनेचा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
06 अप्रैल - 12 अप्रैल 2026

शिष्य वही, जो गुरु के बोले बिना उनके मनोभावों को समझ ले : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
24 मार्च, 2026

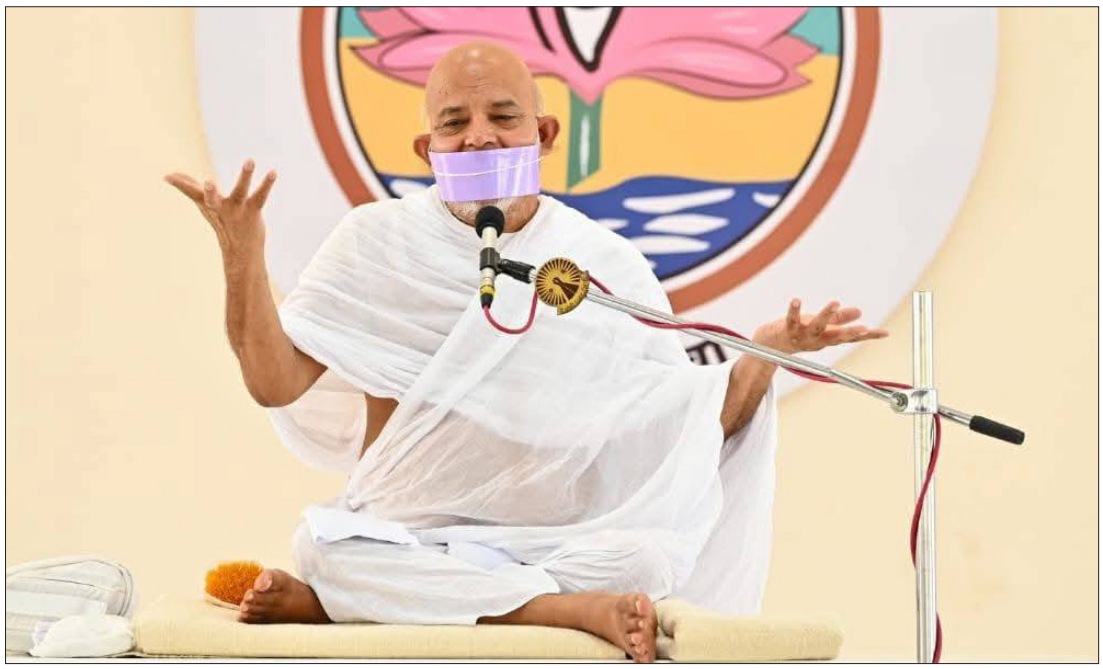

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लाडनूं स्थित सुधर्मा सभा में चतुर्विध धर्मसंघ को संबोधित किया। वर्तमान में 'उत्तरज्झयणाणि' आगम के प्रथम अध्ययन 'विणयसुत्तं' पर व्याख्यान देते हुए आचार्यश्री ने गुरु-शिष्य संबंधों की प्रगाढ़ता और विनय परंपरा के सूक्ष्म सूत्रों को रेखांकित किया।

शब्दों से परे 'इंगित' को समझना ही शिष्यत्व : आचार्यश्री ने फरमाया कि एक सुविनीत और कुशल शिष्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह गुरु की वाणी के साथ-साथ उनके मन की इच्छा को भी समझ ले। उन्होंने कहा, 'यदि शिष्य बिना कहे गुरु के भीतरी भावों और इंगित को समझ लेता है, तो यह उसकी विशिष्टता है। यदि कभी असमंजस हो, तो शिष्य को उचित अवसर देखकर विनम्रतापूर्वक गुरु से मार्गदर्शन मांग लेना चाहिए।'

आज्ञा का पालन और समयबद्धता: प्रवचन के दौरान पूज्य प्रवर ने गुरु की आज्ञा को 'तहत' (शिरोधार्य) कहकर स्वीकार करने पर बल दिया। उन्होंने फरमाया कि शिष्य केवल सुनकर ही न रह जाए, बल्कि उसे अपने आचरण और कर्म में पूर्णतः परिणत करे।

निष्ठा : गुरु द्वारा सौंपे गए कार्य को पूरी तन्मयता से पूर्ण करना।

समय प्रबंधन : कार्य को नियत समय से पूर्व संपन्न कर आचार्य को सूचित करना एक आदर्श शिष्य का लक्षण है।

मैनेजमेंट के सूत्र : समर्पण और अनुभव का मेल धर्मसंघ में कुशल प्रबंधन (Management) की चर्चा करते हुए आचार्यश्री ने महत्वपूर्ण बिंदु साझा किए:

1.सतत निगरानी: संगठन के मुखिया को सौंपे गए कार्यों की समय-समय पर प्रगति (प्रोग्रेस) पूछनी चाहिए ताकि कार्य में गति बनी रहे।

2.समर्पण ही श्रेष्ठ सेवा: जो शिष्य अपने दायित्वों के प्रति पूर्ण समर्पित रहते हैं, वे ही संघ की सबसे बड़ी सेवा करते हैं।

वृद्ध साधुओं का योगदानः आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि जिनकी आयु अधिक है या स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है, वे भी अपने अनुभव और सूक्ष्म चिंतन से संघ को सही दिशा देकर महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। 'हमारे धर्मसंघ में विनय की परंपरा अत्यंत उन्नत है, जहां शिष्य गुरु के भावों को क्रियान्वित करने के लिए सदैव तत्पर रहता है।

विनय से महकता है व्यक्तित्व, व्यवहार में लाएं सौंदर्य और माधुर्य : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
25 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लाडनूं की पावन धरा पर 'उत्तरज्झयणाणि' आगम के माध्यम से मानवता के कल्याण हेतु पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्यश्री ने जीवन में 'विनय' और 'व्यवहार कुशलता' को सफलता का मूल मंत्र बताया।

विनय से ही प्रशस्त बनता है व्यवहार : श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि व्यवहार कौशल का सबसे महत्त्वपूर्ण सूत्र विनय है। विनय न केवल व्यक्ति के व्यवहार को निखारता है, बल्कि चित्त समाधि की दृष्टि से भी इसका अत्यधिक महत्त्व है। उन्होंने स्पष्ट किया कि सामुदायिक जीवन में, जहाँ अनेक व्यक्ति एक व्यवस्था से जुड़े होते हैं, वहाँ पारस्परिक व्यवहार में विनय होने से ही सौन्दर्य, माधुर्य और गांभीर्य का संचार होता है।

वाणी का संयम और माधुर्य आवश्यक : आचार्यश्री ने बाह्य सुंदरता की तुलना में आंतरिक और व्यावहारिक सुंदरता पर बल देते हुए कहाः

सौन्दर्य : उच्छृंखलता और अमर्यादित भाषा व्यवहार की सुंदरता को नष्ट कर देती है।

माधुर्य : मिष्ठ और शालीन भाषा के प्रयोग से ही जीवन में माधुर्य का दर्शन संभव है।

गांभीर्य : व्यवहार में गहराई साधना की तीव्रता से आती है। जैसे सागर में गहराई और पर्वत में उच्चता होती है, वैसे ही एक मनस्वी व्यक्ति के व्यक्तित्व में ये दोनों गुण समाहित होने चाहिए।

जल्दबाजी और आवेश में न लें निर्णय : आचार्य प्रवर ने समाज और संगठन के उत्तरदायी व्यक्तियों को सजग करते हुए फरमाया कि किसी भी निर्णय में आवेश, उतावलेपन या भावुकता का स्थान नहीं होना चाहिए। ज्ञान की गहराई के लिए आगमों और दार्शनिक ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक है। एक मेधावी और विनीत शिष्य, जो विनय पद्धति के प्रति समर्पित होता है, उसकी कीर्ति पूरे लोक में फैलती है और वह अन्य प्राणियों के लिए आधारभूत शरण स्थल बन जाता है।

शासन गौरव साध्वी राजीमतिजी का गुरुकुल वास :

प्रवचन के उपरांत नोखा प्रवास संपन्न कर 'शासन गौरव' साध्वी राजीमतिजी योगक्षेम वर्ष के संदर्भ में गुरुकुल वास में पहुंचीं। उन्होंने अभिवंदना के साथ अपने भावों की सुंदर अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर उनके साथ सहवर्ती साध्वियों ने मधुर गीत का संगान किया। नोखा से आए बड़ी संख्या में श्रावकों ने भी अपने वक्तव्य और गीतिका के माध्यम से गुरु चरणों में श्रद्धा निवेदित की।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

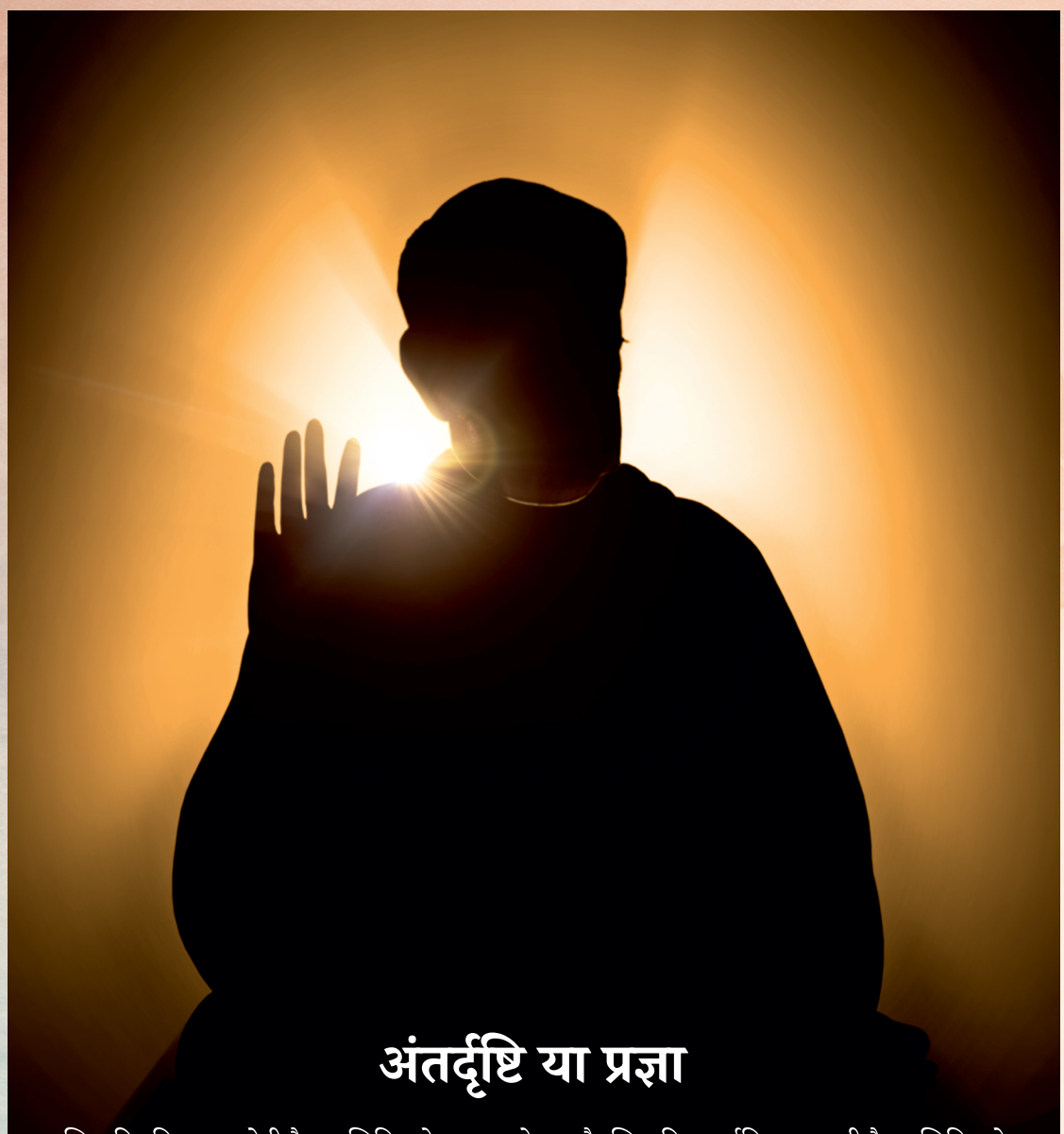

अंतर्दृष्टि या प्रज्ञा

जिसकी दृष्टि जागृत होती है, वह क्षितिज के इस पार देखता है। जिसकी अन्तर्दृष्टि जाग जाती है वह क्षितिज के उस पार भी देख सकता है। आचार्य भिक्षु की अन्तर्दृष्टि जागृत थी। उन्हें प्रज्ञा का बल उपलब्ध था। उसके आधार पर वे भविष्य की खिड़की से झांक लेते थे।

1. एक व्यक्ति ने पूछा– घोड़े के कितने पैर होते हैं?

आचार्य भिक्षु थोड़ी देर मौन रह कर बोले– दो आगे, दो पीछे– चार पैर होते हैं।

प्रश्नकर्ता बोला– सीधी-सी बात पूछी, उसका उत्तर देने में आपको इतना चिन्तन कैसे करना पड़ा? बहुत लोग आपकी प्रत्युत्पन्नमति से आश्चर्यचकित हैं, फिर इतना विलम्ब कैसे?

आचार्य भिक्षु बोले– तुम्हारा अगला प्रश्न हो सकता है कनखजूरे के कितने पैर होते हैं? तब मुझे सोचना पड़ता, उस समय क्या तुम यह व्यंग्य नहीं कसते कि पहले प्रश्न को झट-से उत्तर दे दिया, अब गाड़ी अटक गई।

प्रश्नकर्ता सकुचाता-सा बोला– आपने मेरे मन की बात कैसे जान ली? मैं तो यही पूछने वाला था।

2. आचार्य भिक्षु ने सिरियारी में चातुर्मास किया। वहां पोतियाबंध सम्प्रदाय के कपूरजी थे। संवत्सरी के अवसर पर कपूरजी बोले– भीखणजी! पोतियाबंध की बहनों से बोलचाल हो गई थी, इसलिए उनसे खमतखामणा करने जा रहा हूं।

आचार्य भिक्षु बोले– तुम खमतखामणा करने जा रहे हो, पर ध्यान रखना– कहीं नया झगड़ा न कर बैठो।

कपूरजी बोले– नया झगड़ा क्यों करूंगा?

यह कहकर वे वहां गए और बहनों से बोले– तुम लोगों ने मेरे, साथ बहुत अनुचित व्यवहार किया, किन्तु मुझे तो राग-द्वेष नहीं रखना है, इसलिए मैं खमतखामणा करता हूं।

कपूरजी की बातें सुनकर बहनें बोलीं– अनुचित व्यवहार आपने किया या हमने? बात-बात में विवाद बढ़ गया। कपूरजी अपना-सा, मुंह लिए वापिस आए और आचार्य भिक्षु से बोले– झगड़ा तो बढ़ गया।

आचार्य भिक्षु बोले– मैंने तो तुम्हें पहले ही कहा था।

अनेक साक्ष्य हैं कि आचार्य भिक्षु होने वाली घटना को पहले ही जान लेते थे। भविष्य उनके सामने वर्तमान बनकर उपस्थित हो जाता था।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भिक्षु की कहानी
जयाचार्य की जुबानी

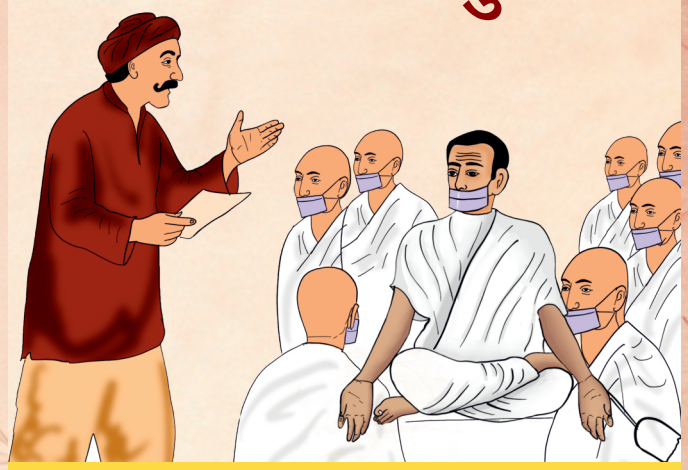

अपने प्रश्न को देखो

स्वामीजी भीलवाड़ा में विराज रहे थे। वहां अन्य संप्रदाय के एक श्रावक ने स्वामीजी से पूछा– 'भीखणजी! किसी श्रावक ने सर्व पापों का त्याग कर दिया, उसे आहार-पानी देने में क्या होगा?'

तब स्वामीजी बोले– 'धर्म होगा?'

तब उसने कहा– 'श्रावक को देने में आप तो पाप मानते हैं, फिर आपने धर्म कैसे कहा?'

तब स्वामीजी बोले– 'तुमने जो प्रश्न पूछा, उसे देखो, श्रावक ने सर्व पाप का त्याग कर दिया, तब वह साधु हो गया और साधु को देने में धर्म ही होता है।'

जानें तेरापंथ को : पहचाने स्वयं को

धर्म : आशा और परिभाषा

'धर्म' नाम जितना छोटा उसकी परिभाषा उतनी उतनी ही विशद्। जितना इसकी गहराई में उतरें उतनी ही नवीनता प्राप्त होती है। परंतु बड़ा सवाल यह है कि आखिर हम धर्म किसे कहें? क्या क्रिया धर्म है! या अक्रिय रहना धर्म! क्या पूजा-उपासना धर्म है या कीर्तन-सत्संग? क्या भूखा रहना धर्म! या 56 भोग युक्त प्रसाद पाना धर्म? क्या बलिदान धर्म है या बलि देना? इन तमाम सवालों में मानव का मस्तिष्क उलझा हुआ है, फलतः वह कभी कुछ तो कभी कुछ करता रहता है। इससे सुलझने के बजाए और उलझता जाता है। फिर प्रश्न यह होता है कि सही परिभाषित धर्म क्या हो? जिससे कल्याण हो, आत्मोत्थान हो, जो जाती-पंथ-मजहब से परे हो व सबके लिये सुगम हो।

धर्म की परिभाषा बड़ी सरल व सहज है। धर्म वह है जो आत्मकेन्द्रित हो। धारयति इति धर्म अर्थात् जो धारण किये हो वह, अथवा जो व्यक्ति को गिरने ना दे, पतन ना होने दे वह धर्म है। जो सदा सही राह दिखाए, सत्य बताए, अज्ञान रूपी पर्दा हटाए, जो जात-पात का भेद मिटाए वह धर्म और अंत में जो इस संसार चक्र का पुनरावर्तन मिटाए वह धर्म।

क्या आप जानते हैं?

केले का छिलका सचित्त माना जाए।

साप्ताहिक प्रेरणा

।। 15 मिनिट ध्यान साधना करे ।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
06 अप्रैल - 12 अप्रैल 2026

श्रद्धा के बिना ज्ञान और आचरण का मार्ग अधूरा

AI के युग में 'कंठस्थ ज्ञान' ही साधक की असली पूंजी : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
30 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, मानवता के मसीहा और युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'उत्तरज्झयणाणि' आगम के तृतीय अध्ययन के माध्यम से श्रद्धालु जनमेदिनी को संबोधित किया। आचार्यश्री ने जीवन में 'श्रद्धा' की दुर्लभता और 'कंठस्थ ज्ञान' की महत्ता पर विशेष प्रकाश डाला।

ज्ञान और आचरण का सेतु है श्रद्धा : आचार्यश्री ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म का श्रवण करना सरल है, किंतु सुनी हुई बात पर पूर्ण श्रद्धा का होना परम दुर्लभ है। उन्होंने कहा, 'यथार्थ सत्य जिस बुद्धि में हो, वह श्रद्धा है। ज्ञान और आचरण के बीच का सेतु श्रद्धा ही है।'जब तक मनुष्य के भीतर दर्शन मोहनीय कर्म और अनन्तानुबंधी कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ) का क्षय नहीं होता, तब तक सम्यक् दर्शन यानी सत्य के प्रति अभिरुचि पैदा नहीं होती। श्रद्धा वह शक्ति है जो संकट की घड़ी में भी साधक को धर्म संघ और अपने पथ पर अडिग रखती है।

डिजिटल युग में 'कंठस्थ ज्ञान' की प्रासंगिकता : वर्तमान सूचना तकनीक के दौर पर चिंतन करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि आज कंप्यूटर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का युग है, जहाँ जानकारी एक क्लिक पर उपलब्ध है। किंतु, जो ज्ञान साधक के मस्तिष्क में कंठस्थ और सुरक्षित है, उसकी महिमा अद्वितीय है। आचार्यश्री ने एक सटीक उदाहरण देते हुए समझाया—'केवल किताब के भरोसे किया गया स्वाध्याय उस बूढ़े की लाठी के समान है, जो अंधेरी रात में रोशनी के बिना काम नहीं आती। जो ज्ञान कंठस्थ है, वही वैराग्य की सुरक्षा करता है और मति को निर्मल बनाता है।'

पूर्व आचार्यों का उदाहरण और स्वाध्याय की प्रेरणा : अनुशासनिक गरिमा के साथ पूज्य प्रवर ने आचार्य श्री भिक्षु, गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का स्मरण करते हुए बताया कि उन महान विभूतियों ने हजारों-हजार गाथाएं कंठस्थ की थीं।

इसी परंपरा को आगे बढ़ाने हेतु उन्होंने समस्त चारित्रात्माओं और समणियों को 'दशवैकालिक' और 'उत्तराध्ययन' जैसे आगमों को कंठस्थ करने की विशेष प्रेरणा दी। प्रवचन के दौरान लाडनूं के स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं सहित देशभर से आए श्रद्धालु उपस्थित थे। सभा का समापन मंगल पाठ के साथ हुआ।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : योगक्षेम चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पंकज कुमार डागा द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। अध्यक्ष : पवन मांडोत